मायड भाषा रा हितैषी
भाई दीपचन्द नाहटा
(कलकत्ता) नै घणै सनेव सूं

म्हैं इत्तोईज कैंवूला

इण कहाणी संग्रह मे म्हारी छाटयोडी कहाणियां हैं। घणीक कहाणियां जाणीजता-मानीजता पत्र-पत्रिकावा छपी अर हिन्दी मे अनुवाद होयनैं लोकप्रियता पाई। जठै ताईं इण कहाणिया री रचना-प्रक्रिया रो सवाल है उठै ताईं अेक वात म्हैं कैंवणो चावूला के आज री हिन्दी कहाणिया रै अें घणी नजीक लागैली। शिल्प, शैली अर कथ्य रा इणा मे नूवे सू नूवा प्रयोग आपनैं मिलेला। म्हैं मानू के अें कहाणिया मायड भाषा री कहाणी-जातरा नैं आगैं धवकायत वधावैली।

लूठा सू लूठा लिखारा रा खरा परीक्षक उण रा पाठक हुवै। उणा री राय री म्हैं अडीक राखूला।

आसालक्ष्मी, नया शहर
बीकानेर-334001

— यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र'

विगतवार

गोमली	9
सतलड़ो	19
भीता ई भीता	24
आवळ-कावळ	28
अेक रै पछै अेक	32
मानखो	39
बात अेक जुल्म री	45
छेकड़ली पूतळी	52
नूवो जनम	58
खोळ	66
अेक उथपियोड़ो	71
खून	76
बाप अर बेटो	83
जठै निजर टिकै	88
चीचड़	90
सुख रो सूरज	94
जमारो	99
मिनखखोरी	103

गोमली

दोफैरी । तपतो तावड़ो । थम्योड़ी पवन । अमूजो अर सरणाटो ।

इसी कुवेळा में गोमली कुवै री टावोड़ी छतरी सूं नीसरी । उणरै माथै पै लोहै री कड़ाई ही जिणमें धेरड़िया ही । धणकरा लोग पराल-कूंटै में थेपड़िया लावै-लिजावै पण गोमली री दुनिया सात भता सूं ई न्यारी ।

कुवो सूनो हो । भागोड़ो अर तिड़्योड़ो सो । ठौड़-ठौड़ तेड़ा आयोड़ा । पगोथिया टूटग्या । आवण जावण में अवखाई रैवती । दोनूं कानी दो छतरियां, ज्यारो ऊपरलो भाग साफ टूटग्यो हो ।

सूनी पगडाडी नपतै मावडै में ओरू ई सूनी लखावै ही । कुवै रै अस-वाई-पसवाई बस्ती रो नाम नीं । हा, थोड़ा आगीनै माळिया, सुनारा अर भाटा रा की थाघा-पाथा घर निजर आवै हा ।

गोमली सुनारी ही ।

आपरै मोहल्लै में सगळा सूं वेसी फूटरी अर बदनाम लुगाई । लोग वीनै छिनाळ कैवै, पण साप ही । आपरै धणी रै रैवता थका उणै अेक माईस सूं लाग लगायलो अर उणरै माथै घर मांड'र बैठगी । माईस पहल-वान अर नामचीन सट्टेबाज हो । इण वास्तै कोई री धीं-चाकट री हिम्मत नीं हुई अर गोमली भलै सोना री आहरा आगै बवाळो करनै रैवण लागगी । लोग इसी नागड़ी राड रै करै भी सो कांई ? नै: नै: मोहल्ला वाळा उणनै पबड़ो देवनै पारै काढ देवणा ।

माईस थापू सूं सगळा डरता । कोटिये रो काटो सूटो । उणनै देखता ई लोगां में सो बैंट जावतो । इण मामलै में दणो सूटो हो बापू । इण

वास्तै लोगबाग धीगाणै ई गोमली सूं बतळावण राखता। यू गोमली मे ई अेक जबरो गुण हो के वा सकट में सगळां रै ई काम आवती।

घाधू भी रडवो हो। परणीज्यां रै दो बरस पछै ई उणरी लुगाई मरगी। मादगी रो की पतो नी लाग्यो। धाधू नै आछी तरिया याद आवै के उण रात नै आपरी घरवाळी नै दूध पायनै सुवाणी जिको वापड़ी सूती ई रैयगी। वा नीद उणरी अखूट नीद हुयगी।

धाधू घणो पछतायो पण रोवणो-धोवणो वेसी नी करियो। उण नै आपरी लुगाई घणी पसद भी कोनी ही। फेर उणरै मन मे गंगलै सुनार री लुगाई गोमली रो फूटरो फररो उणियारो अर झोला मारतो जोबन बसग्यो हो।

उण नै जद कदई फूरसत मिळती वो आपरै डागळै री भीत माथै बैठो बैठो गोमली नै निरखबो करतो। उणरै रूप रंग रै अलावा उणरा लांबा-लावा केस उणनै घणा आछा लागता। उणनै वी राजकुवरी री बात याद आवती जिको म्हैल रै गोखड़ै में बैठ'र आपरा केस नीचै लटकाय देवती अर उणरो प्रेमी वै केस पकड़'र ऊंचो चढ म्हैल मे आया जावतो।

कदैई-कदैई उणनै वेहम होवतो के गोमली रै डील मांय सूं अेक अनोखी सुगंध निकळ'र वीं रै च्यारूमेर छाय जावै जिण सू उणनै नशो सो चढ जावै।

धाधू जितरो कामगरो अर हिम्मतवर हो, गोमली रो धणी गगलो उतरो ई निकमो अर टुकड़खोर। कमावण रै नांव माथै उणनै सी कपवा सी लागती। वो ठालो बैठो-बैठो उमर बितावणी चावतो। तिण माथै अमल खावण अर दारू पीवण री लत न्यारी। घणकरो तो वो अमल नशै में ई पड्यो रैवतो अर उणनै देख'र गोमली रै डील मे सेजां रा कांटा सुवना रैवता। वा गंगलै नै की नी कैवती। घूघटो काढयोड़ी हाडतोड़ मैंणत करनै घर रो गोइसो करती रैवती। कदैई गंगलै नै घर-बिद री कोई बात कंय देवती तो वो वीनै पाछी सात बातां सुणावतो। वापडी मूडै में मूग घाल्योडी बैठी रैय जावती। फांफरकै उठनै कुवै स पाणी लावती। घट्टी फेरती, गोबर थापती, बजार सू सोदो सुल्फो लावती अर फेर घर में बैठ'र पापड़ वंटती रैवती। गगनै मदरांत में ई घर रा

गमळा गेहणा-गांठा घेन गाया हा, या हूर वगन छानी ताणी घूघटो काढ्योड़ो रागती। धारड़ बटना-बटना जद उणरी हथाळयां मे आईठाण हींगण लागता मी मोहल्लै री लुगाइया बीनै सलाह दीवी तू ऊन कातण नै चाल्या कर ... हर गोमली ऊन कातण नै जावण लागी।

ऊन री कोठरी रो सेठ मनोहरदास उण माथै गिरज दीठ राखतो पण गोमली उणनै वर्दई मे नी दीधी। वा आपरै काम सू काम राखती। उणनै तो सिरफ आपरै पेट रो खाडो भरणो हो।

वा धाधू सू धणी दुखी ही। धाधू उणनै छागळे सू सैन करतो... अेकली नै देख र आडो फिर जावतो अर कई उल्टी सीधी वातां करतो। गोमली रो सोई सूख जावतो। मूडै सू अेक बोल ई नी नीसरतो पण धाधू नै जराई दया नी आवती।

आपरी घरवाळी रै रामशरण हुया पछै धाधू नै अेकलापो सतावण लागग्यो। कदैई-कदैई यू लखावतो जाणै वो गैलो हुय जासी, उणनै गोमली रै बिना कीं चोखो नी लागतो। रात दिन उणरी आख्या आगै गोमली रो मनमोवणो सरूप फिरतो रैवतो।

छेवट अेक दिन नाको राख'र उण गोमली रो हाथ झाल लियो।

दोपेरो। सूनवाड़। तपतो तावड़ो। सूनो आभो। बळती भोम। जीव-जिनावर ई नी दीसै।

गोमली बजार कानी जावै ही। मैला गाभा मे भी उणरो जोबन पळका मारै हो। धाधू सिकरै रै ज्यू झपटो मारनै गोमली नै आपरै घर मे खाचली। वा कीं हाका-हूयो करै उणरै पैली'ज धाधू आपरी हथाळी सू उणरो मूडो मीच लियो। उणरी तो यू ई धाधू आगै काळजो कापै हो। वा कबूतरी रै ज्यू डरूफरू हुयगी।

दरवाजो बद किया पछै धाधू उणनै छोडी। वा अेक खूणै मे ऊभी होयनै हाफण लागी। परसेवै सू भीजगी। वा लटखडावती जबान मे बोली—'थानै पराईनार नै छेडता सरम नी आवै।'

धाधू अधगेली सो हुयोड़ो बोल्यो—"म्हैं तनै प्रेम करूं...म्हैं थारै बिना जीवतो नी रैय सकू। ...म्हैं रात-दिन थारी माळा फेरूं हूं गोमली!'

यो मांडो आई बधियो। अबै आपरी बातां मे गोमली री कठै-बतानो होय हो।

गोमली हाथ जोड़ती बोली—'म्हनै छोड़ दे रे धांधू! भगवान रो मूंठो बणायो तो काई इण वास्तै के तू दूजां रा घर मुसावै? ओ घोर अन्याय है धांधू। कोई नैं ओलखो होवै तो प्रेम सूं जीत!...लाटई री चीज चीज नी गिणीजै। जे थै म्हारै साथै जबरदस्ती करी तो म्हैं कुवै लाट कर लेगू। दुनिया नैं मूंडो नीं बताऊं।' इतरी कैव'र वा छिबक-छिबकी रोवण लागी। उण डब-डब नैणां सूं धांधू कानी देख्यो।

धांधू रै दिमाग मे अेक झरणाटो सो उठ्यो। उणनैं लाग्यो जाणैं दुनिया री सगळी व्यथा गोमली रै नैणां मे समायगी है, उणरो बदन ढीलो पड़ग्यो अर उणरी आत्मा उणनैं धिक्कारण लागी। वासना रा परकोटिया शांत होवण लाग्या। उण गोमली नैं छोड दी।

गोमली आपरै घरां आयनै धणी आगै धांधू रा पोत उघाड़्या।

गगलो धांधू कनै गयो। पण उणै की नी कह्यो उल्टा दो रुपिया उधार लेयनै दारु पीय'र पाछो घरां आयग्यो।

घरां आयनै यो धाधू रा गीत गावण लाग्यो। बोल्यो—"धाधू तो घणो भलो मिनख लागै। अबार उणै इज म्हनै मदछकियो बणायो है।"

गगलै रै चेहरै माथै संतोष री छाया ही।

गोमली आपरो लिलाड़ कूट लियो। वा आपरै धणी सूं भौड करण लागी। मन मे सोचण लागी—ओ किस्योक मोटयार? इण मे तो गैरत नाव री कोई चीज ई कोनी। गादड़ी अर हीजड़ो कठैरो ई।

गोमली नैं होळै-होळै मालम हुयो के गगलै अर धाधू मे आपसरी मे खूब पटै। धांधू उणनैं खुलै हाथ सूं पैसा टक्का देवै। गगलै गोमली नैं काम काज माथै भेजणो बंद करदी। जद धणी कमावै तो लुगाई मजूरी वास्तै क्यूं भटका खावती फिरै।

अठीनै धाधू भी सीधो सट्ट होयग्यो। रात दिन आपरी मजूरी रो ध्यान राखै। बस कमावै ई कमावै। कोई सूं झगडो-टंटो नी करै। आपरै मारग आवै-जावै। धाधू आपरै डागळै माथै जावै तो गोमली कानी निजर ई नी नाखै।

गोमली नैं आपरै मन मे उणरो ओ बदळाव अटपटो सो लाग्यो। धाधू जितरो गोमली सूं अळगो रैवणो चावै वा उतरी ई उणरै नैडी आवणी चावै। उणरै हिवडै में अेक अनोखी आग सी धुखै। वा बार-बार धाधू रै डागळै कानी देखै पण जद वो उण कानी झाकै ई नी तो वा मन मे कुमळावै। वो नैं खुद नैं आ ई बात समझ में नी आवै के वा धाधू नैं क्यू देखणी चावै! वो तो उणरै कानी आख उठायनै ई देखै कोनी...डागळै आवनै ऊभै कोनी...मारग मे आडो फिरै कोनी।

कदेई-कदेई धाधू नैं आवता-जावता मारग मे गोमली मामी मिळ जावै, पण वो उणरै कानी जोवै ई कोनी। वो मूडो फेरनै बुओ जावै अर गोमली माय री माय बळ'र राख हुय जावै। कदेई-कदेई घायल नागणी रै ज्यू फूकाडा करण लागती। कई बार उणरै मन में आवती के वा धाधू री हाथ पकडनै पूछै के वो जीवतो है के मरग्यो?

अेक दिन तो धाधू हद ई कर नाखी। गोमली न्हायधोय नैं आपरै डागळै माथै चढी तो धाधू आपरै डागळै माथै बुहारी काढतो। गोमली आज माथै पै पल्लो ई नी नाख्यो। धाधू सू वा निजर होवण खातर बो कानी टिवकी-बम होयनै जोवती रही। खंखारो भी कियो पण धाधू नीचो धूण घाल्या बुहारी काढतो रह्यो।

गोमली माय री माय बळनै राखोडो हुयगी। रीस मे बावली बणगी। इतरो अकड! इतरो नखरो! इतरो घमड!

वा हु:: करती हेटै आयगी।

दोपैरी।

आज धाधू बेगो आयग्यो हो। नार्गै सू घोडै नैं खोल'र उण'रै हील माथै खरेरी करण लाग्यो। गळी मे सून्याड छायोडी ही, धाधू घोडै नैं पाणी पावण सारू कुवै कानी टुरियो।

वो कुवै कनै पुग्यो ई हो कै गोमली ई धनुषबाण ईडाणी माथै मटकी ऊचायो उठै पूगगी। धाधू बीनै देख'र आमै कानी जोवण लाग्यो।

गोमली मटकी भरी।

धाधू रै हिवडै मे मुहारवाळी धम्मण-धोलण लागी पण उण गोमली कानी जोयो कोनी।

आगै होयनै गोमली'ज बीनै वतळायो—"इतरी करडाण चोखी कोनी। थो-निजर हुयो कोनी काई ?"
धाधू बोल्यो कोनी।
"मटकी ऊतरणाय दो।"
धाधू वनै गयो। मटकी ऊतरणाय दी। छिनेक वास्तै उणरी निजर गोमली रै फूटरै उणियारै माथै पड़ी।
गोमली हियै री अखूट अपणायत सागै बोली—"म्हासूं रिसाण है काई ?"
"नी तो।"
"तो पछै आजकाल टेढा-टेढा किया रैवो ?"
धांधू खरीमीट सूं गोमली कानी जोयो। आख्या में सूं अपणायत री भावना टपकण लागी। धाधू झट बोल्यो—"तनै म्हारी बणावण खातर।" अर धाधू आंख्या टमकातो छांई-माई हुयग्यो।
गोमली सुण'र जाणै भाठै री पूतळी बणगी। पग जाणै जमी रै चिपग्या। पांवडो भरणो ई ओखो हुयग्यो। ...पण धीमै-धीमै चाली जाणै धांधू बी नै हबोळा खावतै समंदर में नाखदी होवै।

अंधारी लालर ज्यूं धरा माथै पसरग्यो।
धांधू रात नै बारै वज्यां आळी सिनेमा री सवारियां पुगाय नै आयो। हमेस रै ज्यूं घोड़ै नै बाघ'र उणरै डील माथै हाथ फेरण लाग्यो। थोड़ी ताळ पछै आपरै घर में गयो। दीवो जगायो के उणनै कोई रा पग बाजता सुणीज्या।
"कुण होसी ?"
"आ तो म्है !"...अेक धीमी आवाज।
धांधू आवाज पिछाण'र बोल्यो—
'कुण गोमली ?'
'हूं !'
'इतरी रात बीतयां ?'
गोमली कनै आवती बोली—'आज मन कोनी मान्यो धाधू ! ...म्हैं

हारगी अर तू जीतग्यौ। वा रोवणखारी होयनै उणरै पगा कनै बैठगी।

दीवै रै उजास मे धापू गोमली रै चेहरै माथै अपणायत अर प्रेम री ओर देखण लाग्यौ।

छिनेक मे मैंणा देवतौ सो बोल्यौ—

'तू तो सुहागण-भागण है।'

'तो काई हुयौ!'

'धरम-मरजादा?'

'कोनी चाईजै।'

'दुनिया काई कहसी?'

'तनै चिंता कोनी।'

'पाप'

'म्है थारै चरणा मे हू। अबै वेसी मन ना सताव राममारया। म्है जावक हारगी थारै आगै—बस!'

'फेर।'

'फेर काई?'

'तू थारै धणी नै छोड'र म्हारै घरा आय जा।'

'नी...नी...नी!' गोमली तड़प'र बोली।'

'तो जा थारै घरा!'

गोमली रीस मे तबोळ होयगी। वा अगनमुखी होय कैवण लागी-'तू मिनख कोनी माटी है माटी! आज थै म्हनै निरमी रागी, भगवान थनै सदीव तिरस्यौ राखसी।'

अर गोमली पाछी बारै आयगी।

धापू पैलो जिसो हुयग्यौ।

गोमली भी अवड़गी।

पण जिनरैक अेक नुवी बात बणी।

धापू कोई ब्याव-सादी मे सहर सू बारै गयोड़ो हो। सारै सहर नै दारू-अमल कुण पूरबै? दारू बिना उणरा साथका तूटण लाग्या। कोई रस्तो सूझै नी पण छेवट उणै अेक रस्तो काढ ई लियो।

उण रात गोमली धापू रै बारै मे सोचै ही।

सियाळै री ठंडी रात। सिडक मुसै तो ई डर लागै। बारणै रै तीणां मायनू डाफर घुमै तो हाडका धुजाय नांखै।

इसै वगत मे किणई गगलै री बारणो खड़खड़ायो।

गंगलै फटाकदेय ऊभौ हुयग्यो। झट बारणो खोल्यो अर आवण वाळै नैं पूछ्यो—'मनोहर बाबू दारू लाया हो काई ?'

'लायो हू ।'

'तो थैं इया करौ के म्हैं तो लोटो लेयनैं जावू कुवै री माळकी मे अर गुटका मू डील नैं थोडो निवायो करू...जितरै थै...'

'कठैई... !'

'थैं चिंता ई मत करौ...आ की नी कैवेली। ...म्हैं सगळी बात समझाय दी है।'

'सुण, जे थारी लुगावड़ी म्हनैं साथीड़ो राजी कर दियो तो थारी सगळी लेण-देण साफ अर पचास रुपिया ऊपर सूं।'

'थैं चिंता ई मत करौ।' अर गगलो बारै गयोपरो।

अंधार घोर।

सेठ गोमली कनै पूगो। गोमली हरड-देसी बैठगी अर फेरूं पाछी ऊभी हुयगी।

'गंगलै सू सगळी बातां हुयगी है। म्हैं पाछो वेगो जावणो चावू... अबार तो ग्यारहमेर सोपो पडयोड़ो है!' सेठ थूक गिटतो सो बोल्यो।

गोमली रै रू-रूं मे आग उठगी। वा रीस मे तबोळ हुयौड़ी बोली, 'आपरी भलो चावो तो पूठा इण पगांई पधार जावो।'

'पण ?'

'म्हैं हाको कर दियो तो अबार सेठाई धूड मे मिळ जासी अर जे धांधू नै ठा पडगी तो थारा हाड जोजरा कर नांखसी।'

'थैं म्हनैं पिछाण्यो कोनी काई ? म्है सेठ...'

'कामी कुत्ता नैं कुण पिछाण कोनी ?' बोला-बोला पधार जावो नी तो...!'

'अरे धाघू कनै काई पड्यो है गैली ? म्हैं तनैं फूला री सेज माथै सुवावूला। थारै धणी री आ इज मंसा है। दोनूं जणा नैं मजा

में राखूला।'

'थे जावौ थें म्हैं हारी थक ?' गोमली आयनै सेठ नै धक्को देय दियो। सेठ अेक गुलाची खाई अर बडबडाट करतो बारै निकळग्यो।'

गगलो सगळी रात नी आयो अर गोमली आखी रात टप-टप करता आंसूड़ा टपकावती रही।

सांझरकै गगलो आयो।

गोमली वीं रै चाटियै पड़गी। बाला रा बटका भरण लागी। पण गगलो निमड्यो दणोटी कैवतो रह्यो—'थारी मति मरगी रडाकू! अरे, सेठ सूं सगळा-सुख मिळसी।'

गोमली नफरत सूं थूकती बोली—म्हैं पातर नी बणूला। मन मिळ्या तो मेळा, नीं तो भला अकेला। थारै मन री बात इण जनम में तो पूरी नी होवैला!' अर वा लोटो लेयनै बारै निसरगी।

धापू पाछो आयग्यो। दिन उगग्यो। उणनै गोमली कठैई निगै नी आई। वो गगलो-गगलो करतो गोमली रै घर में बडग्यो।

गोमली नै देखता पाण वीं नै लखायो जाणै वा मांदी हुवै। पीळी... मूंडो उतरयोड़ो।

'काई तू मांदी पड़गी ही?' धापू अपणायत सूं पूछ्यो।

वा की बोली कोनी। सामली भींत माथै दीठ जमाय'र जीवणै पग रै अंगूठै सूं जमीन कुचरण लागी।

'बोलै क्यूं नीं? बोल तनै म्हारी सौगन।'

गोमली चसर-चसर रोवण लागी। हुचकी भरीजगी। धापू रो जीव आकळ-बाकळ होवण लाग्यो। वो गोमली नै आपरै चवड़ी छाती रै चेप'र धीरज बधावण लाग्यो।

'काई बात हुई? की बताव तो सही।'

गोमली रोवता-रोवता सगळी रामायण सुणायदी। सुण'र धापू रै मन में लाय-पलीता लागग्या। पगां में पड्यै लोटै नै जोर री ठोकर मारनै बोल्यो—'उण गडक री आ मजाल? माया रो मद अणूं तो चढग्यो दीसै। माळै नै सूखी लकड़ी रै ज्यूं भाग नाखूंला।'

गोमली धूजण लागी।

'म्है उणरी आख्या काढ लेस्यूं ।...तू चिंता मती कर। म्हैं था बदळो चुकाय देस्यू।'

गोमली भाठै री मूरत बणगी । पण जद धाधू उणरी निजर सू अलो हुयग्यो तो उणनै चेतो आयो । वा बारणै कानी नाठी। पण धाधू कठै निगै नी आयो। अबै वा काई करै ? धाधू नै किण भांत रोकै। छेवट ब ऊण सेठ री ऊन री कोटड़ी कानी नाठी।

उण देख्यो उठै निराई मिनख भेळा हुयोड़ा हा। धाधू नै कई जण काठो झाल राख्यो हो। पण वो झलियो-झलियो नी रैवै हो। सेठ लिलाड़ मे सू लोही रा रेला उतरै हा अर धाधू रै कनपड़ै मे ई लोही लाग्योड़ो हो।

धाधू ऊभो साड री दाई दड़ूकै हो, 'अबकै जे उठीनै आयौ तो खाडौ खोद नै दूर नाखसू.. भीम री तरियां थारो लोही पीय जास्यू। गोमली नै तू अेकली मत समझजै। उणरै लारै धाधू है धाधू।'

लोगडा धाधू नै पकड़'र नीठ उठै सूं अळगो लेयग्या।

गोमली पैलाइज टुरगी ही।

धाधू ज्यू ई आपरै घर मे पग दियो, उणनै गोमली बैठी दीसी। वो गोमली नै आपूड़ा मरघोड़ी आख्या सू जोवतो रह्यो। गोमली रा भी नैण भरीजग्या। धाधू रै कपड़ा माथै लोही रा छाटा लाग्योडा हा।

दोनू जणा अेक दूजै रै लिपटग्या अर रोवता रह्या। रोवता रह्या।

गोमली बसक्या भरती बोली—"अबै म्है थारै कनै सदीव रै वास्तै आयगी हूं। म्है लारला सगळा नाता रिस्ता तोड़ नाख्या है। अबै म्है थारी हूं। फगत थारी। तू म्हारो धणी बणवाजोग है। म्हारै रूप अर जोबन नै तू ई रुखाळ सकै। म्हैं अबै थारी हूं धाधू।'

बस वो दिन के आज रो दिन। गोमली धाधू री घरवाळी बणनै सुख सू रैवै।

सगलो ठा नी कठीनै गयो परो।

□

सतलड़ो

ठाकुर सूरजसिंघ गाय-भैंसियै रै मायरै ढीलो हुयनै पसरग्यो। हार-पन्नो घणो जूनो हो, इण खानदान री ममता लेय'र चालतो हो। अैडा तीन हार-पन्ना बी नै गोरी सरकार री टैम, जिलाधीश रेनाल्ड सा'ब बगस्या हा। तद राजी हुयनै कैयो हो—वैल सूरजसिंघ! तू म्हांचणी घोड़ो जितग्यो है। थूं काळजैवाळो! जिकी चीज मांगी, थूं पड़ावदेणगी देद बाई। म्हैं थारी सरबतड़ी नै म्हारै सागै विलायत लेय जावूलो। बा अेक कम्प्लीट वूमैन है।

सरबतड़ी, ठाकुर री दारोगण री जाई ही। सा'ब रै मन चढ़गी, बस मागली। ठाकुर नै मोटियार सरबतड़ी रै बदळै तीन विलायती पन्ना मिलग्या। विलायती पन्ना रतनजड़िया हा।

पण ठाकुर री बडोडी लुगाई रीस में लालचट्ट हुयनै कैयो—ठाकुर सा, भगवान सूं डरो। था पन्ना रै बदळै म्हारी सरबतड़ी नै देय दी!

ठाकुर रै लाय-पलीता लागग्या। बो बिडबिडावतो बोल्यो—कैड़ी बेसी लागी हुयगी थांनै? बाद नाखूला...जाणै...मन्नै कै टा, म्हैं किसी सरबतड़्यां जलमा दी हूंली! विलायती पन्ना री टाट ईज न्यारी हुवै। जात-बिरादरी वाळा देखनै अचंभै में पड़ जावैला।

ठकराणी नै पडुत्तर देवती? मूंडै में दांत घाल्यो, गळो घगी।

इण बात नै पच्चीस बरस हुयग्या। अंगरेज सिधारग्या, पण ठाकुरां री ठकराई नीं गई।

अेक दिन उणी गांव रो जौहरी मोतीचंद उण कनै आयो। मोतीचंद रो बडेरां में हीरा-मोत्यां रो धोळो बिणज हो। गांव आवतो-जावतो

रैवतो। अवकी बार ठाकुर कनै आयौ। उण री दीठ ठाकुर री सातवीं लुगाई केमरदे माथै पड़ी। केमरदे जवरी फूटरी ही। देखता पाण ई सेठ रो मन ललचायग्यो। इत्तो सातरो पइसो! कँवन ही है कै रूपली पल्लै तो रोही में ही चल्लै!

बैठक मे वडतै पाण ठाकुर दीमियौ जिको अमल खाय रैयो हो।

—पधारो सेठजी, पधारो! अरे भाई कदेई-कदेई तो म्हानै भी चोखी जिन्सा वताया करो! दिखावणै रा पइसा तो लेवो कोनी!

सेठ वी नै भात-भात री हीरा री चीजा दिखाळी। उणा मे अेक सतलड़ो हार हो, वी नै देखतै ई ठाकुर रै जी मे लालच जलम्यो।

—ओ हार कित्तै रो है?

—घणो मूघो कोनी। चाईजै तो ले लो!

ठाकुर माय रो माय बोल्यौ—ले तो ल्यू, पण पइसा कठै सू देवू? हार घणो ई चोखो है। इण हार री वजै सू म्हारो दूजै ठाकुरा मे माण वधमी।

फेर घरविद-परविद री वाता हुवण लागगी। सेठ वाता रै विचाळी केई दफै केमरदे रो भी नाव लियो अर वी री तारीफ करी। फेर वो उठै सू टुरग्यो।

ठाकुर हार मुफत रो लेवणो चावतो। वी रै माथै मे वो हार चरखी ज्यू चक्कर काढण लाग्यो। तन सोवणियो अर मन मोवणियो हार! देखते पाण जी-मोरो हुय जावै।

अचाचूक वी नै रेनाल्ड सा'व री ओळू आई। जे साऊकार रेनाल्ड वण जावै तो...? वी घडी'क-घडी'क केसरदे रो नाव लियो हो...!

ठाकुर नै लाग्यो कै वी रै मायनै भात-भात रा भतूळिया उठण लाग्या हा।

वो मादै ज्यू घणी ताळ पड्यो रैयो। वी वखत ई सेठ आयग्यो। हेठो हुयनै कैयो—खम्मा धणी! इया सुस्त किया पड्या हो?

ठाकुर फटाक सू पूछ्यो—सतलड़ो हार लाया हो?

—हा मा...!

—म्है इणनै लेवूला...पक्कायत लेवूला...!

फेर आपरी डावडी नैं हेलो पाडनै कैयो—मुन्ना ! थारी सगळा सू छोटोड़ी ठुकराणी नैं जायनैं कैय कै वा खुद अठै सरबत पुगाय दै !

ठाकुर हार नैं हाथ मे लेयनैं उलट-मुलट देख'र सोचण लाग्यौ—हार कित्तो चोखो लागै...हीरा तो मूंडै सू बोलै.. पळ-पळ करै.. जाणै साप मण्या खिडाय दी हुवै ! ..म्हनै ओ हार लेवणो है पण किया लू ? ... इण सू म्हारो माण अर रुतबो बधसी । जे ओ मेट मिल जावै तो सगळा मार्थ रुतबो पडसी !

—के सोचण लागग्या ?

ठाकुर निसरमै ज्यू फम्म करतो हस्यो अर बोल्यौ—सेठा ! सोचण लाग्यो कै वगत कित्तो जबरो हुवै ? उण रै सामै सूरमा नै धूल चाटता देख्या है । थानै ठा है कै म्हारै घर री लुगाया गोखै सू ई नी भाकती ही... आज वै मोटरा मे टोलती फिरै । जे वडै पावणं नै आयनै मुजरो नीं करै अर आव-आदरनी करै तो पावणो इणनै बुरो मानै ! थे काई छोटा मिनख हो !...कळकत्तै रा मानीजता जोहरी ..लो म्हारी ठुकराणी पधारगी है...!

बिचाळै ही ठाकुर खो-खो कर खासण लागग्यो अर खखारो थूकण साह बारै निसरग्यो । साचणी या कूडै ही, ठाकुर रो राम जाणै !

मौको मिलतै ई सेठ केसरदे रै अगाडी हार नाखता कैयो— ठाकुर मा ओ हार लेवणो चावै !

—म्हनै ठा है . जणै ई तो म्हनै सरबत रै वास्तै कैयो है !

—फेर थे आ ई जाणग्या हुवोला कै ठाकुर रै वास्तै आपरो की मोल नी । अेक हाररै खातर वै आपनै म्हारै सामै बुलाय दी. .म्हनै आप पैली दीठ मे रूपाळी गणगोर लागी । थानै पावण री चावना रिदरोही रै वास्तै ज्यू जलावण लागगी । ओ आपरो लोभीड़ो धणी म्हारै इण हार नैं मुफत मे पावण खातर आपनै भी म्हनै सूप सकै अर म्है आपनै पैली दफै देखतै ई चावण लागग्यो ! ..जे आप इण नरक सू निसर'र म्हारै सागै चालणो चावो तो थोडी ताळ पछै म्हनै पान रो बीड़ो देवोला ! फेर म्है आपरी, आधी रात नै महादेव पीपळ रै कनै उडीक राखूला !

केसरदे पूठी मायनै बडगी ।

ठाकुर बैठ'र हार नै हाथ में लियो कैवण लाग्यो—हार री बणगट घणी फूठरी लागै। किणी नामी सुनार अर जडियै बणायो दीसै! आ घडत कठै री है?

सेठ जाणतो हो कै ठाकुर नै विलायत रै अलावा विदेसा री की ठा कोनी, सो उण लोरो मारयो—आ घडत विलायत री है।

—म्हनै पैला ई वैम हो कै आ घडत अठै री हुय नीं सकै! विलायत रा ठाठ तो निरवाळा ई है! म्हारा अेक पक्का भायला हा रेनाल्ड। अै विलायती पखा है नीं...उणा रा ई दियोड़ा है। जद सू लाग्या है तद सू उतारणै री काम कोनी। खूब हवा देवै!

सेठ गरब सू कैयो—म्हारो ओ सतलडो हार आपरी सात पीढी पैरमी! चावो तो अेक-अेक लड सात जणा पैर सकै।

—ई में के काव है?

बे इणगी-उणगी री वाता करता रैया। थोडी ताळ पछै केसरदे पान री बीडो लेय'र आई। ठाकुर हुळस'र बोल्यो—बडी सलीकै वाळी है म्हारी आ सातवी लुगाई।

केसरदे वी नै घिरणा सू देख्यो अर मर-देसरी माय बडगी। सेठ ठाकुर नै हार सूपता बोल्यो—ओ हार थे राखो...पइसा री चिंता करीजो मती ...म्हनै रेनाल्ड सू कम न जाण्या!

ठाकुर निमरमाई सू ही-ही कर'र हसण लाग्यो।

☐

दूजै दिन दोपारै बूढी ठुकराणी लाय-पलीता वण्योड़ी ठाकुर कनै आय परी दडूकी—केसरदे कठै?

ठाकुर रै अमल उग्योड़ी हो सो वो जीवती माखी गिटनो थको बोल्यो—म्हनै के ठा?...हूं वी रै चींचड़ ज्यू चिप्योडो रैवूं हू के?

—काना में कवा मत ल्यो! थानै हार मिलग्यो नीं? केसरदे सू ई अट्टा-सट्टा...!

ठाकुर आपरी मैं आयग्यो। फीटी गाळ्या काढतो बोल्यो—जीम घणी

लावी हुयगी दीसै ! मानजादी नाठगी हुमी ! बी रा लखण चोखा थोड़ा ई हा ?

फिरई ज्यू रग बदळतो भळै बोल्यो—ठुकराणी ! सेठ मनै निजराणै में हार दियो है . सनलड़ो हार...थै पंगोत्रा...नो...!

छोकरी रै मूडै सू अेक मोमीजियोड़ी चिरळाटी निसरगी—म्हैं आपरै हार मार्थ थूकू...! केसरदे रै बदळै ओ हार.. !

टाकुर थी रै माथै तकियो नाखतो बोल्यो—चुप रै चुडैल ! . .की बेसी बोलणो आवग्यो के ? जीवनी नै गाड दूला.. बा राड नाठगी तो नाठगी ..अठै किसा साभर सूना हुयग्या ? अेक नी...दस ले आवूला... म्हारै ऊचै खानदान में छोरया री कमी कोनी !...ईं बात नै अठै ई बूर दै...समझी ?

फेर बो अलूट तिस अर लालच सू सनलडै हार नै देखतो बोल्यो—कित्तो चोखो हार है। तारा ज्यू इण रा हीरा पळ-पळ करै...म्हनै सेठ निजराणै में दियो है। बडो मिनख हू नी ! बस इत्तो ई याद राख म्हारी पतिव्रता !

टाकुर मूछा माथै ताव दियो। बी टैम ई जोर रो धमीड़ो हुयो।

ड्योटीदार आवळ-बावळ हुयोडो आयो अर लाबा-लांबा साम लेवतो बोल्यो—टाकुर सा...! टाकुर सा...! ड्योढ़ी री विरोळ पड़गी... ऊपरला गुबद टूटग्या...!

ठुकराणी बारै निसरगी।

टाकुर अबार भी हारनै निरख रयो हो। बडी साति सू बोल्यो—अरे, कोई जीव-जिनावर तो मरयो कोनी ?

अेक लूनो अर गूगो अदीठ पडदो पसरग्यो।

भींतां ई भींतां

भींता रै सागै माणस रो आपरो न्यारो जुडाव हुवै। खासमखास म्हारो। म्है जठै-जठै चाकरी करी, उठै-उठै रै म्हारो पेड़-पौदै, फूल-पत्तिया, भाट-भंखाड, अर खेजड़ै-गूदी री जगै उठै री भींता सू वेसीं जुडाव रयो। कठैई-कठैई तो सोवणी-मोवणी घाटिया ही, बी मे मधरो-मधरो तावडो नै हरियाकरस खेत हा पण म्हारो जुडाव तो भींता सू ई हुयो।

जद कदेई हू म्हारी भायलिया सू भात-भात री भींता री बात्या करती तद म्हारी भायलिया मूडो टेर मन्नै आंख्या टमकारै विना जोवती रैवती। मन्नै ओ लागतो कै उणा री आख्या माय सू घणा मारा सवाल आय नै म्हारै उणियारै माथै चीचड ज्यू चिपग्या है।

फेर अेक मायली पूछती, "तन्नै उदयपुर री हावडहोळ भीला चोखी नी लागी ?"

दूजी चासा पीवती पूछती, "तन्नै जयपुर जिसी गुलाबी नगरी री तिरपोळियो…।"

हूं मुळक जावती। म्हारी भायलिया मन्नै रंग-बिरंगा सवाला सू घेरती रैवती अर हू ना-ना कैवती रैवती।

साची बात तो या है कै मन्नै इण भींतां सू पिराण है। मन्नै अै भींता चिन्नीनीक भी चोखी नी लागै। पण इण भींता रै मांय म्है जका पळ गुजारिया है, जिकी कैद म्है भोगी है, वा कैवण जोगी कोनी। इण भींतां माय जित्ती तरेडां अर उनरियोडा प्लास्टर है…अै सगळा मूल्य है… परम्पराएं है, रूढ़िया है, अर म्हारै मनडै रै मायं मरियोडा दुनणिया है।

भींता…अै भींता ! उण री घुटन अर अमूझ ! दुखदाई ओळ्यू !

म्हारै मामी नार्थं—

"तू तन्नै कै समझै है !" अेक मरद रो रोबीलो सुर गूंजै।

"म्हैं क्या कियो है जकै सू थे इत्ता लाल-पीळा हुय रया हो।" लुगाई रो दबियोडो सुर।

"वाह···तू तो काळा मे कवा लेवण लागगी ?"

"हू आपरो मतबळ नी समझी।"

"थे गोखें रै माय सू जोयो हो, देव साची बोलै···कूडै रो मूडो काळो।"

लुगाई गैली ज्यू दांत निमार बोली, "बडी अचभै री बात है। जद थे म्नै आपरी लुगाई मानोई कोनी, फेर हू थारी मोगन भी खा लेवूली तो थानै किया मरोसो हुसी ?"

"ओह !" मरद बायडै अेक लाम्बो-साम लेयनै मूडो उतार लियो।

थोडी ताळ अमूझियोडो सरनाटो पसरियोडो रयो। फेर मरद रै दणियारै माथै करडी परत पसरी। वो लुगाई कानी बानरै ज्यू झपटियो।

लुगाई माथै जळम-जळम रै अधिकारा नै जवावतो चिरळायो, "थे गोखें माय सू जोयो कै नईं ?"

"जोयो।"

"के ?" मरद री आस्या ज्यू कावडी फाटै त्यू फाटगी। बोल्यो, "चोरी अर सीना जोरी। तू जाणै है कै मामै कुण रवै है ?"

"जाणू हू।"

मरद री आस्या खीरा वणगी। लुगाई रा भींटा अरडनै बोल्यो, "छिनाल राड ! थारी अै टमकारा करती आस्या बारै काढ नाखता।"

अर मरद नूवो घर ले लियो। इण घर री भीता घणी ऊंची ही।

नूवै रंग री प्लास्टर उतरियोडी भींता।

इण घर माय आवती मिझ्या सालर सी काळी लागै। दनूगै रो सूरज री तो लखाव ही नी हुवै। हा, दोपारै गोखा माय सू तावडो ऊछाळो टावर ज्यू आगण माय पतायन आवै।

थोडा दिन बीत जावै।

अेक दिन फेर मरद आयनै सीनो फुला'र बोलै, "वो म्हारै जावणै रै पछै क्यू आवै ?"

"म्हैं के जाणू ? थारो ईज भायलो है । हू बीनै कियां टोकू ?"

"म्हैं तिरिया चरितर खूब जाणू ।"

"कै मतलब ?" लुगाई री आख बदल जावै । भंवरा ऊचा चढ़ जावै। कूड़ै आरोप रै कारण बी रै हियै मे लायपळीता लाग जावै ।

"हू खूब जाणू । वो म्हारै पछै खाली थारै वास्ते आवै ।" मरद आपरो धीरज खो देवै ।

लुगाई बीज ज्यू कडकै, "थे भोत ई गया-बीता मिनख हो।

मरद रै मायलो जिनावर जाग जावै । बो लुगाई नै जोरदार कूटै ।

लुगाई बापडी अहिल्या बण जावै । रोवती जावै अर मरद नै दुरसीसा देवती...जावै ।

इवकै नूवो सहर अर नूवो घर ।

इण घर री भीता ऊची कोनी पण इण घर री सगळी भीता मांय अेक भी गोखो-गोखडी कोनी ही । भीता माथै मूगी काई जमियोड़ी ही अर कठैई-कठैई तरेडा भी ही ।

घर माय आवण रो कीनै भी हुकम कोनी हो पण पून अर तावड़ो तो धीगाणै बड ही जावता । हा, कदैई-कदैई पड़ोसण आ जावती ।

मरद रै मनडै मे सदैव रा बादळिया उगै । पूछै, "पडोसण थारै कन्नै क्यू आवै ?"

"म्हारै काम सू आवै ।"

"थारै के काम है ?"

"हर काम मोटयार नै नी बतायो जावै ।"

"बताणो पड़सी । म्हैं थारो मोटयार हूं, धणी हूं ।"

"म्हैं...!" लुगाई सजावनै-लजावतै कैयो, "म्हैं दो जीवा सू हू ।"

"के ?" मरद रै डील सू पडी अर रै आस्तै सगाटा निसर जावै फेर तड़ातड थप्पड मारतो हुयो बोलै, तू किया मा बण सकै...म्है तो...।"

लुगाई रै भाळ लाग जाव, "तू मन्नै समझ के राखी है ? तू के कैवणो

चावै'''हूं सँग घर माय लायपळीता लगायनै मर जावूली।"
मरद री मिट्टी-पिट्टी गुम। भाटो ज्यूं हुय जावै। चमकै नी मुसकै।
"म्हारै माथै कादो नी नाखिया।"
"मालजादी ।"
"म्हैं नाठ जावूली ''।" लुगाई चेतावणी देवै।"
मरद बाको फाटनै चिरळावै—"नाठ जा ''कूवा-खाड कठैई पण'''
नू थारो मूडो मन्नै पाछो नी दिखावै।"
लुगाई भागणो चावै पण वी रै आडी भीत आ जावै। वा आपरो घर
न्दारो मांडणो चावै पण वी रै अगाडी भीत आ जावै'''वा आपरै काळजै
री कोर नै चोरावै नार्थ नाखणो चावै पण वी री 'नारी' री महानता
आडी आ जावै।
वी नै लागै के वी रै चारूमेर भीता ई भीता है।
भात-भात री भींता।
बिना तरेड़ा अर तीणा री भीता।
वी रै ओळूंटी सूळ्या ज्यूं खुभती रयी। वा आपरै डायरतैणां नै पूछ'र
खुद सूं ईज बोली, "साची कैवूं मन्नै इण भीता सूं थोडो भी जुड़ाव कोनी।
फेर थे सगळै ई मोर्चो कै मन्नै इण हाल माय दूजी जिग्या सूं किया जुड़ाव
होय सकै। पण हूं इणी जुड़ावा रै माय म्हारी मुगति रा दरसण कर रयी
हूं। म्हैं आपनै साची कैवूं हूं—म्हारी तीखी निजरा इण भीता माय हळवै-
हळवै तरेड़ा पाखण लागगी है। म्हैं इण तरेड़ा नै अेक दिन इत्ती बडी
बणा नूं ली कै वो म्हारी मुगति रो नूवो रस्तो बण जावैलो। तद म्हारो
जुड़ाव'''हरियावरम सेना, घाटिया, परवता, भीला'''नदिया ''समदा,
झरणा अर प्रकृति री दूजी चीजां सूं हुय जावैलो'''।
अे भींता'''वेगी-वेगी टूटणै आळी भींता हैं।

आवळ-कावळ

छोटोड़े माळिये रैं माय जद मिम जया सकसेना रो जी अमूजियो तद वा डागळै आयनै वैगा-वैगा लांबा-लांबा सास लेवण लागी। इत्ता लाबा जाणै वा आपरैं हिवड़ै री अमूजणी वारणो काढै है।

आजदनूगै सू ही वी रो जी अमूज रयो हो। क्यू अमूज रयो हो, खाली इण वास्तै कै आज वी रै हेटली अेक मास्टरनी अन्नपूर्णा वीनैं आ कैयदी ही "मैंडम' आप हमैं एजेड लागण लागगी, आपरो डील थुळ-थुळो सो दीसण लागग्यो।

वा इण बोल सू घणी वाचाळ हुयगी ही अर घरैं आवतैं पाण ही वैं सोवण आळै मांलिये रैं मांय लागोड़े काच में आपरो उणियारो देखियो। वी नै आपरै डील व उणियारै माय कोई फरक नी लाग्यो। वा रीस मू वोली "अन्नपूर्णा" वडी कूडी है। सेवट है तो फ्लर्ट ही। म्हा सू जळै।

फेर वा आपरै डील रैं अेक-अेक हिस्सै नै देखणैं-परखणैं लागी। वीनैं लागियो कै अबार भी वा घणी मोवणी-मोवणी अर फूटरीफर है। वी मैं अबार भी चुम्बक जेडी खिंचण री ताकत है।

वैं वैगासीक साबण सू हाथ-पग धोया। आरनैं घोली तरियां मजाय नै अेक कमूम्बल रंग री साडी पं'री। इण बिचाली वी नै निम लागगी। वैं फ्रिज खोलियो। अेक वाम री लपट वी रै नाक रैं धगाड़ी घूमर घालगी। वी रो जी दोरो हुयो। देखो जणै मालम पड़ियो कै पणाई दिना री वासी साग-रोटयां पड़ी है। इणगी उणगी रम अर दूजी दाल-साग रा दाग थेटि-] खोडा है। वी नै सताव पड़ियो कै वैं लारलै घणाई दिनां सू फ्रिज नै साफ नी कियो है। फेर वैं अवाचूर रो मोखियो कै किणी मपरामण नै च-

चुगावणै फिज री सफाई करवाय लेणी चाईजै। पण वै इण विचार नै बी टैम ही छोड़ काढ़ियो। कारण हो कै आणै आळी चपरासण भी वीं रै घर री हेंग जिम्म री खोट काढ़ैली। इण मानजादी हरखी चपरासण नै तो अठै ताईं कैय नाखियो---'बैन जी! थारी कोई भी जिम्म ठीक जागा माथै मागोडी नीं रवै। अब थै ही देखो, फिजरै हेठै ईंटघाडा लगाय राखो है। पिलग रै माथै उछळनै आळो गिदरो है पण वीं माथै चादरो फाटोडो अर मैलो। धार रै नीचग आळा पियालिया अेकदम बोदा अर कोजा।

जया रीस में भरगी। सोचण लागी कै आ बाळणजोगी दो टकै री चपरासण भी म्हारी गत्या उडावै अर मन्नै उजड्डु जाणै। पण वीनै के ठा कै *जया सक्सेना एम० ए० बी एड० है। हैड मास्टरणी।*

वा गाभा पैरपरी इस्कूल जावण नै त्यार हुई कै घडी कानी जोयो। चोकी, लै आ गड घटी तो बन्द पडी वळै अर बी माथै मकडया जाळो भी बणाय काढियो। तद वा आपरी रिस्टवाच नै जोवण लागी। लाधी जणै चलन देगियो। ''इस्कूल जावण रो टैम हुयग्यो हो। वा वेगी-वेगी चप्पल पैरी *अर साइकल माथै* चढ परी इस्कूल पूगी।

दोपारै छुट्टी मे ज्यूं ही वा आपरै कमरै में बडी कै कमता गुप्ता अर सविता खन्ना री अेक सागै हंसी सुणाई पडी। वा माय री माय बळगी। घंटी बजावनै सविता खन्ना नै बुलायी।

सविता खन्ना आवनै धाण बोली, "मैडम. था मन्नै बुलायो।"

"हां, म्हैं पूछूं कै तू मन्नै देख'र हंसी क्यूं?"

"नीं तो!"

"कूडी मती बोल।'''हंसी री भी न्यारी-न्यारी पिछाण हुवै।"

सविता रो मूंडो उतरग्यो। वै सोचियो कै अवै साच बोलण मे ई फायदो है। इण वास्तै अरदास रै सागै बोली, "जे आप माइन्ड न करो तो अेक अरज करूं।"

"बको।" वा चिप'र बोली।

"था पगा रै माय तो सोनै री रमझोळ पैरी है पण हेठै चप्पल नाइ-लोन री, था भी टाके-आळी। इणी बात माथै म्हानै हंसी आयगी।"

"यू मिल्ली'''हू कईई थां लोगा नै चार्जशीट देदूंली।"

"सॉरी मैडम !"

बी दिन जद जया सक्सेना साड़ी री जगा चुस्त मिनवार अर कुर्ते रै मांय इस्कूल पधारी तद दूजी मास्टरनियां री हसी रुकणी दोरी हुयगी। बी पोसाक रै मांय बीरो धुळियो डील चिरळाय रयो हो अर जया सक्सेना गरब सू अेक ही बात कैवती ही—"म्हारी उमर इण पोसाक रै मांय दस साल कमती हुयगी।"

अर जद इणी बात नै कमला गुप्ता रिसेस मे चाय पावती वेला जया सकसेना री मूडो मकन कर'र दौरायी तो सैंग जणिया खी खी हसण लागगी। बस जया सकसेना रै लायपलीता लागग्या। वा आपरै मगळा माथै कटक पडी, ' थ्यू नटणियां री तरियां खी खी करो हो ?"

सैंग गूगी बणगी। वा चिरनावती बोली, "मन्नै मालम है के थैं थ्यू दांत काढो हो।···म्हारी पोसाक माथै···? म्हैं कूडी बोलू ?···थारी जबान कियां चिपकगी ?···दूजां रै माथै थूक नाखतै थानै लाज नी आवै।" वा रोवणखारी हुयगी। गळगळी होयनै फेर बोली, "जकै माथै भगोन हसै बी माथै सैंग हसै जद था लोगा नै म्हारी तरिया अमूज··· अकेलोपण अर खिडियो जीवण मिलतो जणै ठा पडतो के दूजा रै ऊपर हंसणो किसोक हुवै ? तोता सूक जावता।"

वा पगोपग घरै आयगी। पिलग माथै जराकदेमरी पड'परी बसका भरण लागगी। रीस अर पीड़ मे तड़फण लागगी। थोडी ताळ पछै बी री रीस काई ठडी पडी तद वा सोचण लागगी—आपरै आवळ-कावळ घर, जिनगी अर जीणै रै तरीकां माथै···हाय···बी रो सगळो जीवण ही आवळ-कावळ रैयो है···ऊधी-सूधी बात्यां सू भरियोडो···गऊ जेडी सूधी मां नै बाप तलाक दे काढियो जिकै सू बी रो बालापण धूधू चाटतो बीत्यो···किसोर पणै में मा सिरीजी सरण पधारगी···जिकै सू सगळो बदोबस्त विगडग्यो। मोटचार होवण रै सागै प्रीतडली री गैर घूमेर घाटिया मे वा गुमगी। सोवणा उजाळा मे भटकण लागगी पण बी रै मायलै बी नै धोखो दियो अर दूजी छोरी सू फेरा खा लिया। तद जया नै लागियो के वा अेक ऊडै कूवै मे पडगी हुवै। इण रै पछै जया रो काळजो चकनाचूर हुयग्यो। जाणियो

के अबै बीरै अगाडी धोरा ई धोरा है, कादो ई कादो है···पण बी भी आपरै अतीत रो गळो मोस'र परणीजगी 'अेक अजाण मिनख सू। चवरी में फेरा खावती वेळा बै होम री पवित्र सुगन्ध रै माथै अेक विनती करी ही है भगवान मन्नै अेक चोखो जीवण दिये जिकै मे हू म्हारो, म्हारै धणी अर म्हारै होवण आळै टाबर-टीगरा रो मुख देख लू' पण बी रो धणी धणोई सुवारथी निकळियो। वो जवा रै टकै पीसा माथै गिरज आळी दीठ राखतो अर वो जितै ताई मावै माथै धोनी भटकावतो नद ताई वो जवा नै जवा जाणतो। फेरू अेक डावडी।' वो बात-बात माथै जवा नै मनावतो अर मारतो-कूटतो। सेवट जवा बी नै भी नावा हाथ जोड काढिया 'बी सू तलाक ले नाखियो···फेर बी रो जीवण आवळ-बावळ, ऊंधो-सूधो अर बिना मीग-पूछ रो हुयग्यो। हळवा-हळवा बी रै माय घणी अजीब आदता अर कुटावा जलमगी। आवळ-बावळ प्रवृत्तिया जिणा नै बी रै जीवण नै ही आवळ-बावळ बणा नाखियो।

वा घणीनाळ ताई बमवा भरती रैयी। सेवट जी हेठो कर'र हाथ-मूंग अर मूडो धोयो···चून पाडी ··अर मागडो चिलकगी मूगी माटी पैरगी बारै निसरगी।

सौ-पचास पावडा हाल'र ठमगी अर आपरै ब्लाउज मायं जोयो — ब्लाउज थोडो अर बात मन्नै बी रै अेक कोथरो हो।

वा गळगळी हुयगी। मार्चनी बी रो जीवण तो आवळ-बावळ ईज है।

अक रै पछै अेक

म्हैं दरवाजो खड़कायो। बा हेठै आवती-आवती विचाळी ईज रुकगी। म्हैं दरवाजै रै अेक तीणै माय सू जोयो। बा बसका भर रैयी ही। म्हैं बी नै हेलो पाड़ियो पण वै की भी पड़ूत्तर नी दियो। सागै ही बा आपरा आंसूडा नै घोनीरै पल्लै सू पूछर हेठै आवण लागी।

वी रै पगा री अवाज मन्नै सफा सुणीजती ही। उण रै घर माय गैरो मरनाटो हो। घर रै बारणै भी अेकदम गैरो सून सूतोड़ो हो। वठै मी साफ ही कै उण रै घर रै चारूमेर सेठां री हवेल्या मंभाड़ा मारती ही।

मैं भी थोडोक एलर्ट हुयग्यो। वै दरवाजो खोलियो। सदैव री तरियां आज उणरो उणियारो गुलाब रै पुष्पां ज्यू नी लाग रैयो हो, अेकदम उतरयोड़ो। जाणै उण रै उणियारै री चमक दमक किणी ब्लाटिंग पेपर सू सूकाय नाखी हुवै। बी रा नैण लालचुट हुयग्या हा अर उणां मे अेक लाबो सो फैलाव पसरग्यो हो।

म्है बी नै गमीरता सू पूछ्यो, 'प्रभा, आज थांरो मूडो खल्ला री कूटियोडो ज्यू क्यू लागै है ?"

बा विचाळी ई बोली, 'नीं तो ? हूं उदास लांगू ? कठै ? हू तो घणी राजी हू।'

वै आपरै हिवड़ै री हिलोरां नै लुकावण रो जतन करियो पण दुख बी रा आख्यां मे आयै बिना नी रैयो। बा मन्नै आपरी बरसाळी मे ले आयी। म्हैं बैसग्यो। बा थोडीताळ मे चाय बणायनै पूठी आयी। उण बीच म्हैं विचारतो रैयो कै आज प्रभा माय री मांय रोय रैयी है। हू प्रभा नै

थान्नै तीन वरसां सूं ओळखूं हूं। साचो अपणापो है। म्हां सूं की भी बात छानी नीं राखै।

वा चाय रो प्यालो हाथ में थमाती बोली, "लो चाय पीवो।

वै मुळकण रो जतन करियो पण उण रो नाटक चालियो कोनी। आंख्यां डबडबाईजगी। म्हैं चाय नै पीवतो बोल्यो, "के बात है?"

"की नईं।"

"क्यूं कूड बोलो?" म्हैं चाय रो घुटको ले लियो।

'थन्नै तो म्हारै माथै भरोसो कोनी। हूं थन्नै सच कैवूं कै मन्नै की भी नीं हुयो।'

"नईं बतावणो चावै तो ना बता। पण अेक बात रो ध्यान राखीजे कै मन्नै घणोई दुख हुवैला।"

प्रभा पत्थर री देवळी बणगी। म्हैं बीं माथै अेकदम टिककीवत हुयग्यो। मोटीसीक ल्हारली बातां आंख्यां रै अगाड़ी घूमण लागगी—प्रभा रो म्हां सूं हिवड़ै रो हेत हो। म्हैं भी बीं नै प्रेम करूं।...ल्हारला तीन बरसां सूं। बीं रो मोटयार म्हारो भायलो, पक्को भायलो। इण सारू म्हारै मनड़ै में अेक चोखो माणस 'इण बात' सूं धूजतो रैवतो। म्हारी नैतिकता मन्नै मूंड देवती रैवती। इणी ज कारण म्हैं म्हारै प्रेम नैं उघाड़ो नीं करियो, होठां माथै नीं आवण दियो।

ऐड़ी ई हालत प्रभा री ही। वा भी म्हारी कानी लाग राखती। पण पति रै खातर घणो सागो सनेव टपकावती रैवती...जाणै पति उण रै खातर परमेसर है। अेक होकड़ो हो बीं रै मूंडै माथै। जणै भी देखो प्रभा कैवती दीखती "म्हारो पति मन्नै माथै चढायोड़ी राखै "की चीजवस्त री कमी नीं रैवण देवै।...अर वा कितरी सुख है, आ बात आवणिया जावणियां नै दरसावती रैवती। घर में कोई पावणो आय जावतो तो वा उण रै खातर सागीड़ा मालमलीदा मगावती अर उण माथै औ असर नाखती कै हूं संसार री सगळां सूं सुखी लुगाई हूं। पण हूं जाणूं कै बीं रै हिवड़ै में कित्ती जबरदस्त लाय लागोड़ी है। कित्ता समन्दर उफाणा मार रैया है! मन्नै ईज पतियारो हो कै उण रै हियै में अेक निरमी अर दुखियारी नारी जुगां सूं कुरजा ज्यूं कुरळावै है। अेक चकोरी उण रै हिवड़ै रूपी आभै

मांय लट्टू ज्यू घिरणावै है। म्है दोनू अेक दूजै री नीयत सू वाकफ हा।

म्हैं भी घणोई ओछो अर मूगलो मिनख हू। नैतिकता अर आदर्श री वातां तो घणी करू पण मानू अेक भी कोनी। भायलै री लुगाई सू छानै-ओलै प्रेम करणो कित्तो वडो पाप हुवै! पण म्है अै सगळी वाता सोचतो थका भी कादै में सूवर ज्यू लोट रैयो हो। अचाणचक प्रभा वसका भरण लागी। वा पतासै ज्यू फीमगी। वीं रो उणियारो आसूवा सू भरी-जग्यो। मैं चाय नै मेज माथै राख दी अर वोल्यो, 'तन्नै देखतां पाण ई मन्नै थारा आखा मिलग्या। थारै मन नै म्हा सू घणो कुण समझसी?

वी रै होठा माथै कठाई जमगी ही।

म्है बी नै भात-भात री वातां सू किचोय काढी। जद म्हैं वी पर अो मोमो मारियो-तू तो घणी ई सोरी-सुखी है तो वा ढोल ज्यू फाट पड़ी, 'म्हारी जिनगी अेक वासती है, जकी मन्नै अदीठ रैयर धुकावै है, जकै नै हू म्हारै कांधै माथै अेक मुडदै ज्यू ढोवू हू।'

म्है जाणग्यो कै बी रै काळजैरी पीड़ावा सू भरियोडी कोर छुईजगी है। आज उण रो होकडो उतरग्यो है अर वा आपरै जथारथ रूप मे आयगी है। म्है उण सू फेर कुचमादी की, 'आ तू कैवै? अरै तू तो घणी सोरी सुखी है?'

'धूड हू सोरी-सुखी। डूगर दूर सू ई चोखा लागै।' वी लांबो सास लियो अर अळगळै सुर मे बोली, 'हू थानी योगेस सरमा री धर्मपत्नी तन्नै कैवू कै वा वापडी आली लकडी ज्यू धुखै है। हू विसवै भर भी सुखी कोनी।'

उण रै ऊपरलो कूड रो खोळ उतरग्यो। अेकदम नागी हुयगी है।

वा बोली, 'हा राजू, म्है लारलै दस वरसा नै मुगी-मुगी कैयर मार काढिया। दस वरस ई क्यू, सगळी जिनगी सुख रो नाटक करता करता वितादूली···पण आज तन्नै कैये बिना नी रैवू कै म्हारै जैडो कोजो अर वैमी धणी इण भोम माथै दूजो नी देख्यो।'

म्हारै काळजै में ठड वडगी। पूछ्यो, 'थारो धणी थारै माथै वैम करै? अरे! वो तो वापडो घणोई भलो है! उण री अडरस्टेडिग भी चोखी है।'

'धूड चोखी है! संग मरद मन्नै अेक ईज माजनै रा लागै अर-योगेस घणोई नाटकियो है। वो बडी-बडी वातां दूजा रै अगाडी ई करै।

हू अबार ताई उण रै सागै धमीडा मैय रैयी हू। हियै मायली तुमी नो हू जाणू ई कोनी। थांरो भायलो अेक बूढो···डोकरो अठारवीं सदी रो मिनख है—लुगाई नै ताळै मे बद राखणियो ·।'

म्हैं वीं कैवू उण सू पैलाई वा बोली, 'तू सुणर हैरान हुवैला कै वीं मन्नै थासू बोलण सारू बरज दियो है। कैयो—राजू म्हारै परपूठ थारै मन्नै किया आवै ? छि मन्नै तो ऐडा मिनखा माथै घिरणा सी आवै।'

'म्हारै सारू ··?' म्हैं मायनै सू आकळ-बाकळ हुयग्यो।

'आ कित्ती बडी ट्रेजेडी है कै अेक मिनख आपरै मनमेळू नै मिल भी नी सकै।'

'म्है तो आवणो ईज बद कर देवूला।'

'नईं-नईं, तन्नै तो आवणो ई पड़सी । इयकी म्हैं परवाह नी करूली। लारलै बरसा मे म्हैं योगेस री ऐडी मूरखता घणी देर सैयी है। मन्नै मुळकती देख'र उण रै डील माय सापसलीया लाग जावै···पण आज सू म्हैं नी मानूली तन्नै ठाह कोनी—पछर थारै भायलै म्हारै रिस्तैदार नै लेयनै ऐडो उधम मचायो कै म्हैं घामी खावण रो तेवड़ो कर लियो···बो रिसतैदार म्हासू उमर मे भी छोटो हो ··ए थारिया बात ·· ऐडी मठार-मठार बाता करतो कै मन भरीजतो ई कोनी पेर घरां मारण मे तो बो नम्बर अेक हो।···म्है उण रै सागै कदैई दोर हुवती कोनी ·अर तू आ चोखी तरिया जाणै है कै थारो भायलो किसो सुगलो मिनख है···बो हसणो तो जाणै ई कोनी ··कमावणो अर खावणो···पण खाली इणी बाता सू आदमी जी सकै कोनी···जीवण माय तो दूजी चीजा भी चाईजै ··अर योगेस···उण रै जीवण मे दो ई चीजा है—अेक नोकरी अर दूजो म्हारो ओ बावळो पूटरो डील···इण डील रै सारू बो म्हारी गरज सारै, नई तो मन्नै दो टोकरा ईज मारै।···आज हू थारै सामै साफ बात कैय रैयी हू।···म्हारो ओ धणी···धणी री रुखाळण नै छोडसी हू तन्नै या बात सुणाऊ ··बो छोरो म्हा सू छोटो हो···बाद हो अंगार... मन्नै जीजी कैवतो ··मनै घणोई सुहावतो। नी आवतो तो हू अेक सूनी-पण सू भर जावती···म्हारै अन्तरी-विचारी कोरो तो हो बावळो।··· बालकी सूटण लाग जावती···अर उण रै आवतै पाण ई हू हरी करम हुय

जादमी···मन्नै गायगो···म्हारै पास्मेर मावण सो छायग्यो है···।

अेक दिन री बात है।

म्हैं दोनूं जणा जी गोन'र हत रया हा। वै मन्नै अेक चुटकलो सुणायो हो—अेक जणो आपरी प्रेमिका नै पूछ्यो, 'थै थारै बापनै बता दियो नीं कै हू अेक लेखक हूं।'

प्रेमिका उण सू बोली-अबार ताईं तो म्हैं थारै छोटै गुणा री ईज बखाण करियो है—जिया दारू पीवणो···जूवो खेलणो ''नीं कमावणो''· आ लेखक आळी बात तो हू सगळां सूं पछै बतावूली···?

प्रभा माडाणी हसी। हसता-हसता म्हैं आसीम री हाथ झाल लियो, वी दसत ई योगेश विन्नेस री तरियां मायनै बडियो अर लालचुट हुवनै बोल्यो 'ओ कोठो कोनी, जठै थे दोनूं जणा ही ही करपरा हसो हो···।'

म्हा दोनूं जणा मे तो सून वापरगी। आसीम रो मूडो तो धोळो फक हुयग्यो, जाणै वो अचाचूक रो किणी भयानक मादगी रो सिकार हुयग्यो हुवै !

योगेश चिरलायनै कैयो, बारणं निसरज्या। अठै आवण री की भी जरूरत कोनी। फेर मन्नै ऐडी बाता सुणाई, जिणा रो अेक ही मायनो हो कै हू माळजादी हूं। कोठै माथै बैठणआळी।···आसीम गयोपरो। म्हारै रू-रू माय वाळिया काटा खुभण लाग्या···हजारां कीडा म्हारै सगळै डीळ नै पीडावां सू भरण लागग्या···हू खावणो छोड़ नाखियो···अेकदम निकोट···मूडै अगाडी फाडी तगायलीनी···इण तरिया तीन रात्या बीतगी। इणी विचाळै हू मरणै रो नेहचो करलियो पण छोटा-छोटा टाबरा नै देखर म्हैं हिम्मत हारगी···तिरिया जूण कित्तै रग विरगै धागा सू बधियोड़ी हुवै ! ···राजू ! नारी रो दूजो नाव विद्रोह हुवै। पण वा विद्रोह सू पैला दया री सूरत हुवै। इण वास्तै ई वा आपरै माथै अन्याव अत्याचार सैवै ! अहिल्या बणजावै···पण जद वी नै राम जेड़ै देवता री ठोकर लागै तो वा खप्पर धारणी दुरगा बण जावै···वा की नै सो की समझै कोनी···।'

'थारै भायलै योगेस रा म्हारै डील बिना बाणका तूटण लाग्या। सेवट वीं मन्नै धीगाणै जीमाई···अर···? तन्नै नीं बता सकूं···लुगाई री

अंधारण में म्हारो प्रेम मरण री तरियां गुड़ळी मारियोड़ो बैठ्यो है···म्हैं बदनाम हुय जावूंलो···म्हारी इज्जत माथै धूड़ पड़ जावैली···ओरतं मूंडै माथै काळख पुत जावैली···मैणर नागी हुय जावैली अर मराफत उघाड़ी हुय नै आपरी असलियत बता देवैली···।

म्हैं भयभीत हुयग्यो। म्हारै चाम्कानी हाको फूटग्यो—ओ ईज है यो मिनख जकै आपरै मायलै री बऊ नै एक्स्प्लोयट करलीनी···बसो बसायोड़ो घर उजाड़ नाखियो···।

म्हारो डील पाणी-पाणी हुयग्यो।

वा मन्नै घूरण लाग रैयी ही। म्हैं हेठी निजर करपरी कैयो, 'अर पारा अै टाबर-टींगर?'

वा गैळी ज्यूं चिरला पडी, 'सगळा नै वासती लागैयो।' थोड़ोक सरनाटो। फेर वा वसका भरती बोली, 'तू ठीक कैवै है। हू की भी नी कर सकूली···पाछलै वरसा री तरियां जीवती रैवूली अर जीवण रै इण लाबे रस्तै नै तय कर नाखूली···म्हारो···ओ ईज जीवण है कै···हू म्हारै व घणी रै खातर टाबर जणू अर उण री वासना रै साप रो जैर पीवू? हू अठै सू दूजी जगा चली जावूली···जठै तू नई हुवैलो···बस, जानरा··· ई···जानरा···अेक नगर सू दूजै नगर ···दूजै सू तीजै···।

वा रोवण लागगी। हू ऊभो हुयग्यो। म्हारी घणी इच्छा हुई कै प्रभा नै बाथ मे भरपरी धावस दूं···पण म्हैं भी किणी नैतिकता अर चोखाई सूं बधियोड़ो ऊभो रैयो। फेर अेक भलै माणस तरियां बारणै निसरग्यो जाणै म्हा सूं चोखो कोई दूजो मिनख कोनी!

□

बात अेक जुलम री

आ कहाणी किणी खास जगा अर खास मिनख री कहाणी कोनी। पे चौ के अेक कानी आपरै अधिकारां रै वास्तै हाथ-पग साम्योडी भीड। रीस अर खार खायोडी भीड। आभै नै धूजावता हुया नारा· ''मुरदाबाद'''हाय-हाय ''आ सरकार निकम्मी है· झूठी है जुलमी है!''

दूजी कानी अेक न्यारी भीड ऊभी है। खाकी अर मूंगा वरदी माय। बन्दूकां, मशीनां, लट्ठ अर आसू गैसा रे गोळा सू सज्योडी भीड। पैली भीड माथै दटणा सी भरती भीड'''अेक-अेक घडी ऑर्डर री उडीक रावती भीड।'''

दोनू अेक दूजै रै सामै ऊभी ही।

उण दो भीडां री आ कहाणी है।

नारा आभै नै दादण रो जतन करै। पैली भीड अगाडी वधी। सामै नारा री हिरणा करणै सारू गोळ्यां तडपा मांडै।

नारा रै मिस उण जुलम री दूजी वात भी ही। घणी मानि सू जुलम ...नै। आ जुलम आपरै अफसरा नै अेक शासन देवणी ...ी शासन सासा रो अेक करडो शासन!

...नै पूछ्यां, नीचा हुया कै अेक ऑर्डर गूंजियो अर ...। वारडा मारग उडीनै-उडीनै नाटण लाग्या।

... -- पोता अगाडी अर वधिया के

...। वै भी बोलै ...

मौमाई मिलै। किणी उछीठनै छोरे बक दियो, "तू तो बे माँ-बाप रो है—थारै तो नी मा अर नी बाप•••।"

"म्हांरी मा तीला मासी है!"

"अरे आ थारी मा कोनी, आ तो थारी दाई है तन्नै खाली पाळियो-पोसियो है।"

प्रवीण नै इण सू काळजै नै रोसणआली पीड हुई। वो नाठ'र मासी कन्नै आयो। सगळी विगतवार बताय नै पूछ्यो, "के तू म्हांरी सागी मा नी? म्हारा सागी माईत कुण हा।

मासी बी नै घणी टालमटाल करी पण सेवट बी नै सगळी साच बतळावणी पडी।

प्रवीण नै घणो मलाल हुयो। बी रै सुभाव मे बदलाव आयो। दसवीं भणनै रै पछै वो मैनत-मजूरी करतो अर सागै-सागै भणतो भी जावतो।

उकीलायत री भिणाई री टैम मासी मांदी पडगी। दम फूलण लागग्यो। मासी री होरप प्रवीण सू देखी नी जावती। वो मासी रै मगरा मार्थ हाथ फैरतो नै कैवतो, "मासी•••अबै हू कठैई चाकरी करलू लो •••थारो बिखो मिट जासी•••तन्नै फूला री सेज सुवावूला।

मासी बी रै माथै हाथ फेरनै कैवती, "लाडी, तू म्हारी चिंता फिकर नी कर•••हूं सावळ हुय जावूली•••तू भणनै मे मन लगाय। आ उकीलायत री पढाई करड़ी मैनत चावै।"

सेवट इम्तान खतम हुया।

पण इम्तान रो नतीजो निसरणै सू पैला ईज मासी सुरग सिधारगी। प्रवीण रा सगळा सुपना अध-विचाळै ही तूटग्या।•••बी नै आपरै च्यारूंमेर डूगर-ई-डूगर दीसण लाग्या•••बीनै ओ लागतो के वो डूगर रै माथ भूको-तिसो इणगी उणगी टप्पा खावै। बी रो जी जैंदर मे अमूझण लागग्यो। मासी री ओळू अेक भी छिन बी रो लारो नी छोडती। सेवट वो उकत'र मुम्बई आयग्यो।

. .

जू .
नै पावै . ।'' '' "

प्रवीण अेक ईसाई रै घरे पेइंग गेस्ट रैयग्यो।

पैली दफै ई घर रै मालिक रावर्ट पूछियो—यू थारै घर मे कुण-कुण हुसी ?

"कोई कोनी।"

"ओह ! ···थारी जाति के।"

"जिकै रो कोई कोनी···जिकै रै माइता रो पतो कोनी, बीरी के जाति अर धरम हुवै ?"

रावर्ट हेत सू भरग्यो। वै आपरी लूली मोट्यारबेटी सू बी री जाण-पिछाण करवाई। दोनी वी सू हाथ मिलायनै कैयो, "प्रभू ईसू चायो तो तन्नै अेक चोखी चाकरी मिल जासी।"

प्रवीण नै दोनी चोखी लागी।

फेर वो चाकरी रै वास्तै कमर कस परो बारणै निकल्यो। कोडी नगरै री ऊंची-ऊंची अट्टालिकावां रै कमरा मे भख मारतो रयो। हर ठौड़ वीनै अेक बात सुणीजती—

नो वेकेन्सी !

नो वेकेन्सी !

जागा कोनी !

वी रो मन मरण लाग्यो। सुपना तूटण लाग्या। वी नै लागियो के इण भारत-भोम मायं खाली पढाई-लिखाई सू काम कोनी हालै; इण रै सागै धरम-जाति अर कुनबै री आण-साण भी हालै···क्यू सेठ-साऊकार बी री भिणाई री जगा जाति अर धरम नै पूछै ? आह! मिनख कितरै छोटै-छोटै टूकड़ा माय बटग्यो।

हळवा-हळवा वो रीस मे भरग्यो। बी नै आवळ-बावळ सवाळ घेरण लाग्या। बेकारी भूक, टूटण अर तुनकार···।

सेवट वै अेक कम्पनी रै मालक नै चिरलाय नै कैयो, "के म्हारो खाली मोट्यार होवणो पाप है।"

माळक मुळकनै कैयो—जिकै मिनख नै आपरोईज पतो कोनी उण मायं हूं कियां भरोसो करू ?

तद बी री सगळी आसावा कोडीनगरै रै माय गुमगी।

मजूर कोनी।"

डोली हळवा सू बोली, "रीस ना कर, ठंडै हियै अर माथै सू सोच ''आखर मिनखा री अेक जात-धरम तो होवणो ई चाईजै।"

"हूं थारी बात सू संमत कोनी '' प्रवीण पडूत्तर दियो, "मिनख नै मिनख हो रैवणो चाईजै।'''डोली! हूं तन्नै प्यार करूं ''थारै रोम-रोम नै म्हूं चावूं, अंतस रो हिवड़ै सूं आव-आदर करूं पण आ नीं जाणतो के थै तन्नैंनी, म्हारै धरम सूं लाग राखो।"

"थावस सूं सोचनै।"

"सोच लियो, डोली सोच लियो।" प्रवीण दुख सूं कैयो, "म्हैं तन्नै ऐड़ी नीं जाणी ही। डोली, हूं थारो अैसाणमद हूं ''तीन महीनां सूं भाडो नीं दे पायो'''थारै घर माय फोवट रा टुकड़ा खावूं मेवट थै सोग सी इण निठल्लै ने वितरा दिन छाती सूं चेप'र राखसी।"

सदई रावटं कमरे मे बटियो। सगली बात सुण'र बोल्यो, "डोली, म्हैं तन्नै ऐड़ी नीं जाणी ही।"

डोली रो उणियारो दूध ज्यूं सुफेद भक हुयग्यो। बड़ा-बड़ा नेणा मे अपराध-बोध जलम्यो। माथो हेटो करनै ऊभी रैयी।

"अकल! हूं दो-च्यार दिना मे अठै सूं जासूपरोला। हूं घणो पूट-भागियो हूं। म्हारै जेड़ा जीव साला भूखा ई जलमै अर मरै।"

अकल रावटं थी नै आपरै गोनै सूं लगाय नै कैयो, "मार्ई मन!''' ऐड़ो मती विचार'''दीनु भगोन घणो दयालु है, भगोन थी सून मनता री टेव राखै। अल्लाहा रै घरां मे देर पण अंधेर नी। डोली म्हारै है। खोटी है, दीनै आ टा थांनी मे धरम मांई पाभी हुवै जवै ने जद थारो बदळलियो? धरम तो हिवड़ै रो हेलो हुवै ''जणंई तो जणो-जणो कवै कै मानो तो देवता नी तो भाटो''। डोली! तन्नै प्रवीण सूं छिमा मांग्णी चाईजै'''।

डोली रा नैण गीला हुयग्या।

प्रवीण कैयो, "अकल! म्हनै डोली घणी सुवावै, मानखो सारै '''जद हूं थधे सू साथ रावूला जद डोली नै आपरै काळजै री कोर बणावूला'''।

"थारी नोकरी लाग जासी···सुणियो कोनी, ट्राई एंड ट्राई अगेन थॉव···यू विल सक्सीड एट लास्ट···।

प्रवीण रै उणियारै मायं ऐक नूवों ओज हो—चानणो हो, भरोसो हो।

छोटी नेड़ी आयनै बोली, "हूं थासूं छिमा चावूं ?"

धून रो जोर सूं झोको आयो। गोखो खुल ग्यो। तावड़ो घर मूं बड़ियो अर तीनों जणों नै आपरी गोदी रै मांय लै काढ़ियो जाणें तावड़ै रै रूप मांय मानखो आयग्यो हो।

□

वै चिरळाटी मारी—टुक्कडखोर कठै ई रा !…

पूनळी माथै में तडीड लेवनी बोली—हे भगवान ! मनै तो पाछो इण रो चुड़लो भळै धारणो पडसी ''अेक ई दिन मे दूसर'''गोप्यां रा नाथ ! अे किसै जळम रा पाप परगटया ?…

अर वा मळै नाचण लागगी।

□

राजा शाळी-पीळी आंधी में टैण वांरैं ज्यूं बोल्यो—तूं इयां कयूं हंसै ए, कौडी राड ? जाणै कोनी ? थारो धणी आयोड़ो है।

पूतळी रैं मां माथ रनी ही रीस कोनी आई। वा कंयो-मनैं तो या माथैं ई हंसी आवै।

—क्यूं ए···के हूं भांड नाच्यो मनैं ?

पूतळी गांपनी धकी बोली—म्हारा नूंवा धणी ! मैं इण सिंघासण री छैकड़ली पूतळी हूं। म्हारैं आगली इगतीस पूतळ्यां तो आपरैं धण्यां रैं हीणपणैं, अऊगणैं अर स्वारथपणैं आळैं लखणां सूं कुमौत मरगी अर मरी नीं इण खातर कै यैं आपरैं धण्यां नैं धरम अर फरज री बात कैयी··· मायळ मारग चालण खातर कैयो। साची बात सूं बटका-सा बोड़ीजै अर धारड़ां मिचायगी।

—तू कैवणो के चावैं ? वा बता ! राजा मचनची खावतैं कैयो।

—म्हारै चहतैं रा भरतार···म्हारी सेजा रा सिणगार···म्हैं तो हूं जूनैं जुग री पूतळी···राजा विक्रमादित्य रैं जुग री···उणीज वगत सूं म्हैं म्हारो फरज निभावती आई हूं। इण सिंघासण पर कूडा, कोजा, दोगला अर मया-वीत्या बैठना आया···पोत कोई रा ही था सूं 'छाना कोनी···गरिमा मिटगी···रैंथी-सैंथी नैं थे सगळा मिल'र खाडा-खूंच करणनैं मभियोड़ा हो ईज।···इण खातर थे पैला पूरी बात सुणलो म्हारी, फेर ई सिंघासण माथै विराज्या ! ···नीतर फोड़ा घणा पावोला। कान लगाय'र बात नैं सावळ सुण्या···!

एक रिंदरोही में रैवता घणा सारा स्याळिया। वां में हो सागीडो भाईपो, सातरी अेकठ। वैं गिणती में अणमैं'दा हा। रोही रो राजा सिंघ भी वां सूं डरतो छव-छव पइसा करैं। कैवत है कै 'संघे शक्ति कलौयुगे' कळजुग में तो जकैं रैं संगठन आळो खेलो तावैं आय जावैं उण रैं सैं' लारैं ई रैवैं। स्याळियां रैं इण बात रो गुमेज हुयग्यो। वैं माथैं सूं चालण लागग्या, सूनोड़ा रैं ही ठोकरा मारण लागग्या।

बीजा जिनावर सोचा-विचारो कर'र गुपताऊ ही भेळा हुया अर अेकठ करी। लूकडी सगळा सूं चावग, सो उणनैं ही स्याळियां रैं इन्याय सूं मलटण रो काम सूंपीज्यो।

कागलै कैयो—लूंकडी वैन, अबै लाज थारै हाथं।

लूकड़ी हुंकारो भरयो।

सोचता-सोचता लूकडी रै एक बात छेकड हियै ढूकगी।

वा केई जिनावरा नै भेळा कर'र स्याळिया रै नेता कनै लेयगी अर चोली—म्हे सगळा ही थारा चाकर बणना चावा। थारी हाजरी मैं रैय'र सेवा बजावणी चावा, ऐठो-चूठो खाय'र म्हारा दिन सावळ तोड़णा चावा…।

स्याळियां सोच्यो कै मुफत मे ही अे हाजरिया ठीक मिल्या अर वा नै राख लिया।

वा रै टोळ भेळा रैवता थका हाजरिया स्याळिया रा कान भरणा चौळाया। हरेक नै एक ईज बात कैवता कै टोळै रा नेता तो थे ईज ओपो…परतख नेता लागो…। फेर काई कैवणो ? स्याळिया रै भचाभची मरु हुयगी। लूकडी सिंघ नै मळै नूत लाई अर सिंघ घणकरै'क स्याळिया नै गटळगट्ट करग्यो। फेर तो जद-कद ही भूख लागती तो सिंघ मरजी आवै जिकै नै ही गटकाय लेवतो।

अबै तो जिनावरा मे रोवाकूको माच्यो अर सगळा जाय पूग्या लूकडी कनै। उण नै ओळमो देवता बोल्या—कै थारै करमा सू सिंघराजा थरपीज्यो पण अबै ओ जुलमगारो बणग्यो।

लूकडी रै गळै मे आयगी। बाखडी किसै कूवै मे पडै ? उण सोच्यो कै काल सिंघ तो वा री ही गटको कर जासी…।

वा बोली—की-न-की उपाव जरूर करसू।

अेक रात लूकडी भागा-न्हाठो कर'र रोही रै जिनावरा नै भेळा करया। घा रो जुलूस बणाय सिंघ कनै पूगी। सिंघ रै रै'वास री चोफेर घेराबदी कर'र कूकी—सिंघ राजा, वेगो नाठ ! …नी तो आज अे सगळा जिनावर थारी मीट काढ देसी…आज थारी खैर कोनी…वेगो-सो नाठज्या…।

सिंघ थारै नीसरयो तो दैसारोन उण री मोट पडदो हुवो सिंघ, जको ही उण सू मोटो ही। वो तो धूक मडुगा मे अर सेतीसा मनाइनो ही दीस्यो।

पूतळी भळै खिल-खिल करती हसी। कहाणी संपूरण करती बोली— दूजोड़ो सिंघ जको दीख्यो हो वो तो असल में गोधो हो जिको सिंघ री खाल ओढ राखी ही।

ता पछै तो रोही में ओ एक तमासो हुयग्यो। हर कोई ही सिंघ री खाल ओढ'र रग जमावतो। मजै री बात आ ही कै किरडै ज्यू रगबदळू अर मौके सारू आख -फोरणिया री तो चांदी हुयगी। अबै तो राम ई रुखाळो हो रोही रो!

नूवों राजा दांत पीसतो बोल्यौ—पूतळी! तनै कांई म्हारै चमचा खातर बैम है कै वै थूकाफजीती करसी?

पूतळी निरांत सू उथळो दियौ—राजा, लारै मुड़'र जोयलै ठा पड जासी!

राजा लारै मुड़'र देख्यो तो उण रा पग चिपग्या। सैंग नाठग्या अर रैयो फकत जको दीवाण, ऊभो-ऊभो दोनू हाथा सू आप रा झींटा खोसै हो।

आकळ-बाकल हुयोड़ो राजा उण नै पूछ्यौ—मनै राजा थरपणिया वै सगळा कठै नाठग्या?

—वै गडकडा तो वूहा गया। जावता-जावता आ भळै कैयग्या कै ओ राजा तो हणै सू ही घोरका करणा पौळाय दिया। पछै तो सो'रै सास जीवण ई काई देसी? म्हे तो बीजो ई कोई राजा थरपाला!

राजा सिंघासण पासी माग्यो अर ऊण माथै बैठण लाग्यो तो : नै रोकती पूतळी दाकल दी—खबरदार! इण सिंघासण माथै बि बहुमत रै तू को बैठ सकै नी! हूं आ ईज तो रुखाळी राखू। मनै तो नूवै राजा रो चूडो पैरणो पडै! थारो चूडो तो पैरण सू पैलां उतारणो पड़सी, लागै···हू तो नाक-नाक आयगी अे चूड़ा पैरतां अ उतारतां!

उणीज वखत नूवों राजा जिण नै सिंघासण सू उतारयो हो वो पूट बा'वड़्यो। वो नोटा, हीरा अर मोत्या री उछाळ करतो ही आयो अ उण रै सागै वै सागी ही चमचा हा।

नूंवो जनम

बी दिन दपार मे बडता पाण टाईपिस्ट मिस किस्तूरा मुळकता थका उणनें कह्यौ—"सर ! अेक न्यूज।"

"काई ?" उणें किस्तूरा रै मूंडै कानी खरी मीट सू देखता पूछ्यौ अर अेशट्रे में सिगरेट दबायनें बुझाय दी।

"अेक खास न्यूज !" किस्तूरा आपरै अफसर कानी देखता कह्यौ—"मिस उपमा कालै मिसेज वणगी।"

"व्हाट ?" बो अेकदम जोर सू बोल्यौ।

"ई मे अचरज करण री बात ई कोनी। म्है साची कैवू। कालै बी कोर्ट मैरेज करली।"

"आ किया हुय सकै ? किस्तूरा, तनें पक्कायत ठा है ? किणै ई गप्प मार दी होसी।"

"नी सर, गप्प कोनी। मनें शेफाळी कह्यो।" किस्तूरा आपरो डावौ हाथ टाईप राईटर माथै फेरण लागी। फेरू मुळक'र बोली—"आप तो जाणौ ई हो, शेफाळी रो भाई कोर्ट में अेडवोकेट है, उणै आज शेफाळी नैं आ बात बताई।"

बी नै अेकदम तामस चढी। रीस में मूडौ बानरै रै ज्यू रातौ चोळ होयग्यौ।

आपरै केबिन मे बड'र उण अेक सूगली गाळ ठरकायदी। पछै कुरसी माथै बैठ'र टेलीफून खडकावण लाग्यो। रिसीवर नैं गळै रै बिचाळै दबायो अर माउथपीस नैं होठा सू चिपकायो, पछै डायल घुमाय'र पूछ्यौ—"हैलो उपमा! म्हैं राजन बोलू। म्हैं सुणी के थैं ब्याव कर लियो ?

अनुरूप मायं विचार करणू। हीरोइना री कांई कमी है ?"

राजन गीत में मशगूल हुयोड़ो उठ'र बारनै चाली गयो। उणीं उपमा ई अणमणी हुयगी। मोहन बोली—राजन अेक प्रसिद्ध फिल्म निर्माता है, वो उणनै फिल्म में सू काम दे सकै। वा गुड़ जैसी बण सकी है मा राजन री कृपा सूं।

''काई सोचै है ?'' विनय राजन नै पूछ्यो।

''सोचूं के विनय अर कुटुंब रै विषाळै सगळा नाता-रिश्ता मरग्या। जीवता है तो फगत स्वारथ रा रिश्ता। आपरी सुख-सुविधा खातर अवार रो मानखो दूजै रै हाड मांस माथै आपरो म्हैल चिणावणो चावै।

उपमा इसी बेगी ई भूलगी के उणी किणरा दिनां रा दिन काढ्या हा ···गरीबी री मार सगळा घरवाळां नै तड़फाय री ही···भूख, गरीबी अर जलालत मांय।···टकै-टकै री मोहताज। इणी अबखै बखत में उणरी माई मांदो पड़ग्यो। दवाई खातर हाथ मे कोडी ई नी। अबै करै तो काई करै ?···बा दादा सा'ब कनै गई। दादा फिलमां मे सवाद लिखतो। वो भलो आदमी हो। उपमा रै फूटरापै रो कायल हो। वो चावतो के वा फिलमां मे जावण री कोशिश करै, जरूर चास मिळसी। तद उपमा हीरोइन बणणो नी चावती, पण माई री मादगी उणनै मजबूर करदी।''' दादा बी नै की रुपिया दिया अर पछै राजन सू पिछाण करवाई। राजन बीं नै देखता पाण जाण लियो हो के वा अेक चोखी हीरोइन बण सकै। झट पाच सौ रु० रो महीनो बांध दियो।''

दादाकूज में अेक नैनोसीक कमरो ई दिराय दियो अर सिलसिलो चाल पड़्यो।

पण थोड़ाक दिना मे उपमा नैं लखायो के राजन बाबू उणसू राजी कोनी। वो की ऐड़ी चीज चावै जिकी वी रै वास्तै देवणी सभव कोनी। किणी कीमत माथै वा आपरो चरित्र निष्कलक राखणो चावती। उणरा सुपना फेरूं तूटण लाग्या।

मायड़ पूछ्यो—'आजकाल तू अणमणी रैवै ?''

''हा मा !''

''क्यू ?''

"म्हैं इण फिल्म लाईन में नी रैवणो चावूं। आ लाईन घणी कोजी है। इण में आदमी रै तनमन री कोई मोल कोनी।"

उण सोच्यो के उणरी मा आ बात सुण'र राजी हुसी के उणरी जाई इत्ता रास्तै नी चालणी चावै। पण वा तो उल्टी उणरी बात सुण'र अणमणी हुयगी।

दूजै दिन उणनै बिना बताया ई उणरी मा राजन कनै गई अर उणनै हीरोइन बणावण सारू जोर देयनै बात करी। राजन बी नैं साफ-साफ कैय दियौ—"म्है लाग लपेट री बात नी करूं।···उपमा में हीरोइन बणाण रा सगळा गुण है पण वा अेडजस्ट कोनी करै। आ लाईन तो धाइफाड़ री है।···इणरौ धरम-करम अेकदम न्यारौ है।···थैं बीन समझावो। थोड़ाक दिना में निहाल होय जासो।"

मा पाछी आयनै उपमा नैं कह्यौ—"तू राजन री बात मानसी के सगळै परिवार नै इण नरसवाडा में ई पड्यौ राखसी? आज राजन कैवतो हो के तू अेडजस्ट कोनी करै। बेटी, इण घर री गरीबी तू ई मिटाय सकै।"

उपमा पुड़िया वटै ही। वा पुडी मार्थ घी चुपड़ती बोली—"मा, तू इण लोगां नै जाणै कोनी?"

मा भूंझळ खायनै बोली—"तू समझै क्यूं नीं? अेक फिलम हिट हुयगी तो आपां सगळा निहाल हुय जासा। इण कारण थोड़ौ ऊंडौ विचार कर लाडी!"

पण उपमा आपरै नेट्चे सूं नी डिगी, घर रा सगळा मिनखा उणसूं वैर बांध लियौ अर बात-बात में मोसा मारण लाग्या, अेक दिन तो बी री छोटी बैन अठा ताई कैय दियौ—इतरी सती-सावित्री तो तनै लागी कोनी।···म्हासूं काईं छानी?"

वा फटाकै री दाई भड़ाक सूं बोली—"बाळगजोगी!···मूंडै सूं सम्हाळ'र बोल्या कर।"

बैन नाक में सळ घाल'र बहीर हुयगी।

बोनै लखायौ जाणै उणरै डील मार्थ हजारूं बिच्छू चैंठग्या है। उणनै आपरी मा 'मा' नी लाग'र अेक माळजादी लुगाई लागी, जिकी आपरी

पेटजाई नै नरक मे नागणी चावै।

होळै-होळै वा मांय री मांय तूटण लागी। अजनबीपणै सूं घिरयोड़ी वा अेक अजाण दरद सू तड़फती रैवती। सेवट तूटण री हद सू गुजरतां उण हीरोइन वणण मारूं हूकारौ भर दियौ।

घरवाळा मोद मनावण लाग्या। सगळा बी री सराबणाकरण लाग्या वा माय री मांय अंगांई तूटगी।

□

राजन उणनै बुलाई। वा गई। रात री डीनर ही। पण फ्लेट में राजन रै सिवाय दूजो कोई नी हो। वो अेकलौ बैठी दारू पीवतौ हो उपमा फ्लैट री ठाट बाट देख'र पूछ्यौ—"ओ फ्लैट किणरौ है ?"

"थारौ ! औरूं किणरौ ? म्हारी हीरोइन अबै उण टापरै मे किंयां रहसी ? उपमा···तू देखती जा, थारै वास्तै अबै कोई वात री कमी नी रहसी।"

उपमा गूगी हुयगी। राजन बीनै बैठण वास्तै इशारौ कियौ अर वा बैठगी।

राजा अेक गिलास मे किंग ऑफ किंग्ज (दारू) भरण लाग्यो। वा बोली —"म्है दारू नी पीवूला राजन सा'व !"

• "आ बात म्हनै ठा है पण इणनै पिया बिना तू सफळता रै पगोथिया ई नी चढ सकै। उपमा नू थारै मांयली उपमा री गळी मसोस नाख अर अेक नुंवी उपमा नै जनम देयदे जिकी तनै इण वातावरण रै फिट बणाय दे।"

वा विचारा मे इतरी ऊडी उतरगी के बी नै लखायौ वा दम घुट'र मर जासी। खुद नै संभाळण री कोशिश करी तो घरवाळा रा उणियारा च्यारूमेर फिरण लाग्या। मा रै कह्योड़ा बोल याद आवण लाग्या क बेटी थारै त्याग सू आखे घर री हालत सुधर जासी अर गनीबी री घोर विखौ मिट जासी।

· पछै उणनै को ध्यान नी रह्यौ के राजन कद उणनै दारू पायौ अर पछै काई हुयौ। उणनै लाग्यौ जाणै वा मरगी अर नुवी उपमा जनमगी।

अेक मानरो फ्लैट । उणमे मान भांत री सुख-सुविधावां ।···वार दारूड़ी मे रमग्यौ, माई प्रोड्यूसर बणवा रा सुपना देखण लाग्यो, बैना अठी-उठी रुळवा लागी अर मा आपरी मस्ती मे मगन बणगी ।

उपमा नै लागतो कै सगळा घरवाळा उणरै जोबन रो लोही पीवै । वा रात दिन करड़ी मैणत करनै कमावै अर वै सगळा मछरा करता मौज उड़ावै ।

अेक दिन तो स्वारथ री हद होयगी । 'मन सू मन रै मिळण' री शूटिंग चालै ही, उपमा री तबियत ठीक नीं ही । रूं-रूं मे पीड़ा सी लखावै ही । इण वजै सूटिंग माथै जावण रो आळाणो कर दियो ।

उठीनै प्रोड्यूसर कैवायो कै जे वा शूटिंग माथै नीं आवैला तो इंस्टालमेंट रा बीस हजार रु० उणनै नीं मिळैला । आ जाण'र सगळा घरवाळा हाको मचावण लाग्या । उपमा नै घणो अचूमो हुयो ।

मा तो जाणै डाकण बणगी । वा दारू पीयनी बोली—"माळजादी, थारा नखरा घणा गढग्या । घणी मोरी रैवण लागी जिणसू थोड़ी ई दोरी नीं होवणी चावै । राजी-खुसी जावैली क···?

उपमा री आख्यां सू आंसू भरण लाग्या । अे सगळा वी नै सोनै री चिड़ी मानै अर मा तो उणनै आपरी 'मा' नीं, अेक कुटणी लखावै···उणनै तो बस रुपिया चाईजै···खाली रुपिया । घर रो अेकलो मिनख उणनै कमाई होवै ज्यू लाग्यो ।

या चुपचाप उठ'र बहीर हुयगी ।

आपरी अेक मायली रै घरा जाय'र दारू पीवनी रही अर पछै 'जुहू' माथै पूगगी । सिंझ्या रो सूरज होळै-होळै जळ समाधि लेवण री त्यारी करण लाग्यो । पिळकती किरणां मन मे मोदण लागी ।

उणनै लखायो कै इण ससार मे उणरो कोई हेतु नी है, सगळा स्वारथी है, घोर स्वारथी । जिण दिन वा काम करणो बंद कर देसी, उण दिन सगळा घरवाळा उणरै खिलाफ हुय जासी । जिण दिन वा माड़ी पड़नै हीरोइन रो काम करण रै लायक नीं रहसी, वी दिन अे सगळा मिळनै उणनै सड़पोड़ै सड़क री दाई डागा मार-मार नै घर सू बारै काढ देसी··· हीरोइन री उमर तो पाच-दस बरस री होवै । पछै तो होळै होळै उणरा

दाई उण माथै तूट पड्या।'''प्रोड्यूसर धमकी देवण लाग्या—क्याव किया पछै कुण हीरोइन बणसी ?

पण इण अवडर में अशोक उणनै ठडी पून री अेसास दिरायौ। वो बोल्यौ—उपमा नारी रो असली रूप तो पत्नी बण्याई निखरै। थारो ओ फैसलो सरावणजोग है।"

□

खोळ

बो आपरे घरआळा अर गळीगुवाड सूं सगळै नाता तोड़परो थंमै री जियां ऊभो हो। सामै रेलगाडी ही। बी जूना मूल्यों सू विद्रोव करियो हो। चावतो हो के किणी ऐड़ै नगर माय जायनै अेक दिन हिप्पी जेड़ो जीवण बितावू के जठै मिनख कीड़ा जिया रवै। इण सू बी नै उण जीवण रो साम्प्रत अनुभव हुवैला। बी रै खूजैमे घणां पिस्या हां जिकै सू बो राजा री तरिया थोईम घंटा बीता सकतो हो। आ सोच'र बो रेलगाडी माथै बैसग्यो। बहीर हुयग्यो।

बी नूवी तरिया रा गाभा परिया। सूथण माथै पटपटील बंडो। हिप्पी टाइप रा खिंडियोड़ा झोटा, पीतळ री कमाणी रो चस्मो। सौकीनाई रो। पगा मांय फाटोड़ी पगरखी। बी री मैळजमियोड़ी खुडचां री ब्याव फाटोड़ी ही।

बी आपरै काधा माथै अेक थैलो लटकायोड़ो हो। उणमे अेक चदरो अर गमछो हो। थैलो पटपटील रग रो हो।

गाडी आपरै ठिकाणै पूगी। बो गाडी सू उतरियो। ठेसण नै आपरी दीठ मांय घालतै लाग्यो। मिनख जाणै कीडी नगरो। बी नेहचो करियो के हू अभिव्यक्ति री नूवी सू नूवी सैली नै अपणावूला। सबदां रो उपयोग नूवी तरिया करूला। इणी सदर्भ माय बी सोचियो के अठै माणस कीड़ा-मकोड़ा जिया रवै है। भात-भात री बोल्यां आपस मे भिड़ै अर बी सेंग बिचाळी हुमणो अजब सो लागै। बो गरब सू इणगी उणगी जोयो। फेर अजगर जिया लाबो सास लेयनै कैयो—"म्हारै देस रा माणस बावनिया हुयग्या है।"

फेर वो भीड़ माय गुमग्यो। बी टैमई अेक लुगाई बग्नै मू निसरी। घणी मोटी अर बीं रै डील माय सू बास आवती ही। बी भट सू कैयो— भैम वठै री। वो मवद लुगाई मायं भाटै जिया पडियो। लुगाई बी नै घूरियो। वो खिसकग्यो। दूजो मोट्यार लुगाई नै देखपरो वी कैयो—भैम खानो मोटी नी हुवै, कदैई-कदैई बान सू भी भैम रो मुगाळतो हुवै।

बी थोडी सुगना सी ही। बूढै बळद री जिया रिगचू-रिगचू हालण लाग्यो। अचाचूक बी मायं घणी सारी बोलिया भपाट्टो मारियो। अपडो-अपड़ो…चोर…चोर।

वो भीड माय दड़ो दियां उछळनै लाग्यो अर फेर वो फसग्यो। चोर नै अपड़ लियो। मोटयार हो। फूटरो हो। चोखा गामा। बी सोचियो—इण देस रो निकम्मो मोटयार। पक्कायत ओ बापडो फाका सू उकीतयोडो कोई इजीनियर अर बी० ए० पास ग्रेजुएट हुवैला।

अेक जुवती दमे री मादी जिया हाँफ रयी ही। वा चिरळावती ही पण बी रै आधा सबद कठा में ई मर जावता हा।

सेवट जुवती कैयो—"ओ चोर म्हारो बटुवो खोस'र लेग्यो। इण रो खूजो जोवो।"

चोर भाटो बणग्यो। बी रै उणियारै मायं अेक भी रग कोनी हो। थम्नै जिया ऊभो हो।

जद रेलवै रो सिपाई उणगी आवण लाग्यो तद चोर अेक अजब-सी स्टाइल सू बटुवो खूजै माय सू काढ'र जुवती री हथेळी मायं राख दियो। जुवती बटुवो जोयो—बडबडाई—"ओ म्हारो ईज है।" खोल'र देख्यो। दोनू री निजरा मिली।…बी सोच्यो—अठै सू ई इण दोनां माय प्रेम हुय जावै तो? अेक नूवी तरिया री पैली सिडल्न। कहाणी री अेक नूवी सरूआत!

—"चोर कठै रो? किसो मुमटडो है? मजूरी नी हुवै?" अेक बूढो सुर रैगियो।

बो भन्नायो। अेकदम बासी डॉयलॉग। सिपाई आयग्यो। लोग माछरा जियां उडग्या।

बी उमै-उमै आपरै अणुमान नै दोरो कियो—पक्कायत ओ बापडो

[illegible] हुवैला ?

सिपाई बार रै आगै साथै हाथ [illegible] बोल्यो—"अरे वै विनोदकुमार, [illegible] बाबू रै [illegible]।" [illegible] सिनोदकुमार [illegible] हो।

—[illegible] ! [illegible] है।" बो [illegible] [illegible] [illegible] दूर हुवै।

अबै सिपाई चिड़ग्यो —"बकवास बंदकर।"

बारै सूं [illegible] धक्को मारियो। धक्कमधक्के में बो भी ठेसण रै बारनै आ ग्यो। अचाणचक बीनै [illegible] इणा की मुट्ठी री [illegible] है। सागण पाछी [illegible] क्यूं हुवो ?

अेक [illegible] धड़धड़ावतो बीरै सामै आयो। बीरो काळजो धमधम्यो—अै हू इणरै हेटै आजावतो तो ? सोच'र सागण ऊपर चढ़गो। देखतो रो ऊभो रैग्यो।

अबै बो सड़क माथै हो। ट्रैफिक। भीड़। पाक्सेर काव-कांव।—चांतो हुवै अै हू इण भीड़ मे गुम जावूं। पण बी रै पेट मे ऊंदरा नाचण लाग्या हा···बी मन सोच्यो—पैला पेट पूजा, फेर काम दूजा।

बी टैम बीरै सामै अेक चीज सांड जियां धड़ाक सू पड़ी। बी जोयो—बो बापड़ो हिप्पी हो। विदेशी हिप्पी। हिप्पी आपरा गाभा झाड़तो ऊभो हुयो। पगांई सूगलो। गाभा मैला। दगा चिरोणो। हिप्पी दूकानदार सामै आदर सूं जोयो।···मुळक्यो अर सलाम ठोक'र अगाड़ी बधग्यो।

दूकानदार फाटयोड़ी ढोलकी जियां बोल्यो—"साळा अे मुस्कड चोक रै भाय इंडिया रै मांय इम्पोर्ट हुयग्या। जीमण पछै गोरधन-पूजा करा लेवै पण बळदार नीं देवै। निरलज्ज कठैरा !"

बी आपरा भावरा नचावतो सोचण लाग्यो—मूल्यां रै प्रति लूठो विद्रोह···आक्रोस···आवेस···।

बी नै भी सागीड़ी भूख लाग्योड़ी ही। बो वेगा-वेगो होटल रै मांय बड़ियो अर दो अंडा री आमलेट, चार टोस्ट अर दो काफी हलवा-हलवा जमाग्यो। जद बो बारणै जावण लाग्यो तद काऊंटर माथै मैनेजर कैयो—"दस रिपिया तीस पैसा।"

वी आपरी सूवण रै त्रूजै माय डाय घाल्यो। बीनै लाग्यो कै बीरी मास जमगी हुवै। बयूकै उपरै त्रूजै माय सू वटुवो कपूर जियां उडग्यो हो।

वी इणगी-उणगी जोयो। चिग्गावणो चायो—"चोर चोर···चोर ···अरड़ो···अपड़ो···अपड़ो।" पण वा ठेगण कोनी ही। अेक होटल ही। बीरै रू-रू मे सी-कपा वडगी। वी नै हिप्पी नै नावण आळै दुस्य री ओळू आई। फूम री छवडी जिया नाख्योटो ' वो वारडो हिप्पी ।

—मन्नै हिम्मत सू काम लेवणो चाईजै।

सेवट दूकानदार भी मजियोडो हो। झट सू वोल्यो—"माव री पारेट कटगी है। वटुवो गुमग्यो दीसै ?"

बै खधावळ सू केवणो चायो—"माचेनी म्हारो वटुवो गुमग्यो। बी मे एक दिन राजा री नरिया रैवण जितरा पईसा हा।" पण बीरै मूडै रै टाको लागग्यो।

दूकानदार दात पीस'र बोल्यो—"जवान रै लगाम लगाल्यो, हू सगळा री टेकनीक जाणू···गोरा जेडो ई काळो ··पण हू घणी-घणी धक्का मारनै सान नी बैसूला, श्रीमानजी ?···ओरै रामधन···।" बै आपरै नौकर नै हेलो पाडियो।

बीरी मनमा साची-साची कैवण री हुवी पण बीरो वाको खुलियो कोनी।

रामधन साथळ माथै थापी देयनै ऊभो हुयग्यो।

दूकानदार हुकम दियो—"फार्मूला नम्बर तीन सौ तीन···।"

रामधन दूजै पळ ई बीनै उपाडो कर नाखियो।

—"अरे···अरे···भई सुणो तो सई···।"

—"चुप रै, अे सगळा गाभा खाली दो रिपिया मे बिकेला···किना मोगा है ?" दूकानदार नाक मे मळ घाल'र बोल्यो।

वो हक्का-बक्का हुयग्यो। बीरै सामै उण हिप्पी रो पैंडलो नाचग्यो। वो घर-घर घूमण लाग्यो। हेटी नस करररो नाटग्यो। पाटो जोगो नी। सगळा री निजरा उण सू बिदगी अर भात-भात री हसिया उण रो लारो करणी लागगी ही।

मुळकियो।

अचाचूक उण नै हईड सो उठियो के उणनै या तो चाय पीणी चाईजै या सिगरेट। वी री खोपड़ी सूनी हुयगी, सुस्ती आयगी, तूटण''' विसराव'''पण वै जाण्यो कै उण रै स्टोव मे करासिन कोनी अर सगळी सिगरेटां री पेट्यां खाली ही। खाली वरध जेड़ा कागद चिळकता हा। पण कमरे रे अेक खूणै में राख्योड़ो एश-ट्रे सिगरेटां रे टुकड़ां सूं इण तरियां घिरीयोड़ो हो जाणै कोई स्त्रीभोग-पूल काळी-गोरी छोरयां सूं घिरीयोड़ो हुवै। वो एशट्रे अर बळियोड़ा टुकड़ा नै जोवतो रयो। वै सोच्यो के अे बळियोड़ा टुकड़ा नूवो ऑवजर्वेशन नी दे सकै के? इण छारियो सूं भी न्यारो।

वै विचारियो—कहाणी थठै सूं ई सरू करनी चाईजै। अेक महानगर रो फ्लैट रो ड्राइंग रूम'''रीडिंग-रूम'''स्लीपिंग रूम'''कबाड़खानो! बै भीड़भड़ाकै अर रमकझोळ मे फसियोड़ो अेक अकेलो मिनख! उणरै कनै बळियोड़ा सिगरेट रा टुकड़ा यानी बळियोड़ो वाक्ळता। मांदो व्यक्तित्व। अभाव अर अेकान्त री पीड़ा सूं अमझियोड़ो। जीवण! उथपियोड़ो जीवण।

वै सोचियो—अे सबद घणा वासी हुयग्या। वै अचाचूक रो श्वास लगायो। सोच्यो—इण मे नूवी बात कोनी आई।

वो गैळो ज्यूं कोस लगावतो रैयो। सेवट उथप'र ऊभो हुयग्यो।

वो कमरे रै अगाड़ी बरामदे रै माय आयग्यो। बरामदे छायोलिये रो वसतर पैर लियो हो अर सामले गोखे मे कुण भी नी दीसतो हो। इया तो वो बाइसकोप रे गीता नै मूडा गीता माने पण अवार वी नै कै सूझी के वो आपरै गधे जेड़े सुर मे गावण लाग्यो'''बै सोच्यो के सामले गोखै मे अेक चांद रो टुकड़ो'''। वो वगत ई सामलै गोखै मे अेक सुगळो उणियारो आ ऊंभियो। वो देख्यो तो उण रे हिवड़ै रो फुटरापो कूकणा लाग्यो।

फेर भी वै उण मार्थं निजर नाखी। चाद रे टुकड़े री जगा अेक पाडी ही। वा छोरी री मां ही। वै थूक'र बडबड करयो—दो मींग हीं जावता तो अेक सागीड़ी भैंस हो जावती।'''वै नेड़चे करियो के मिनखां मे भी जिनावर हुवै। जदि नी होवता तो इण गोखे मांय सूं नित री राड़ पचरायत

बारै कूदतो ? ऐड़ी मेम सागै कोई किया जीवण जी सकै ? इणां रो अेक-अेक पल-छिन बीत तणाव अर रीस सूं लीथिजीयोड़ो होवणो चाईजे पण बो हुलास हुयग्यो के सामला धणी-लुगाई कदेई आपस में भिड़ै ई कोनी। ई गोळै में कदेई बदाम अेक चाद रो टुकड़ो आवै जद बो भी आपरी टमकारै कोनी। बै उण सूं निराई मन रा नाना-रिड़ना बणाय लिदा।

बै री मनसा हुई के चाद रै टुकड़ै माथै अेक कहाणी लिखणी चाईजे। बै लिखणी चालू करी। अेक गोरो। बीं रे चोखटै में जड़यो अेक फूटरो उणियारो। बकरी आख्यां। गैर गभीर। बा घड़ीक-घड़ीक आपरो हेठलो होट चूसै। होठ चूसणै रे सागै बीं नै आपरी मीटोड़ी भावनी री ओळू आवती। जबी उणा रो गोरै रे हेठै रंवनो हो पण अबार उण रो फ्लैट बद हो। सायत उण रो धणी मायनै हुसी। बा घणीवार आपरो हेठलो होट चूसती दीसै जकै सूं उणरी मनगा थोड़ी देर रै वास्तै लुगाई-जात वाली जीवणो ई बिसर जावै। पण बीं नै इण बात रो घणो इचरज हुयो के बै आपरी नायिका माथै आ अुपमा क्यूं थोपी ? बै फेर आपरी कहाणी नै फाट नाखी।

अबै बो थाप'र बोर हुयग्यो नै उणनै लाग्यो के कदेई-कदेई अेकले में मिनख मागोड़ो अमूझ जावै। बो बिना बात रो आपरी कुरसी में थीतियड़ो बैठो हो। बीं रो निचलो तन लपग्यो हो और माथै में होळी-होळी पीड़ हुवण लागगी ही। बै चीन देस रै बणियोड़ै फाउन्टेनपेन नै बद कियो। ओ पेन बीं रै अेक आसाम रै भायले लादनै दीनो हो। चोखो पेन हो। पण नी बो इण पेन नै ले'र खुद नै बडूं अपराधी आलन लाग्यो। दुसमण रै देस रो पेन। यदि थाणी-एडमेन रै दिसा में दुस्मण उण रै घर री तलासी लेवती तो मायन बीं नै अे आई आ.र. रै पेटै बडै घर भेज देवती। साचैई, आंपा लोगां में किन्नी भी राष्ट्रीयता कोनी। आपारो राष्ट्रीय चरित्तर स्वतत्रता रै पछै बणियो ई कोनी अर बो उण पेन नै मेज रै हेठै नाख दियो। इण बात सूं बै गौरव करलियो।

बो नै अबै सिगरेट पीणै री ओर री हाजत हुई। सोनड़ी दबगी ही। माचो भारी-भारी सो लागण लाग्यो। बो लाइट मूड में हारबै सिमरणो। बो दिमूंये सूं ई लिखणो चावतो हो, इण वास्तै बै ताका बट-

ळिया ई कोनी। वो हेठै आयो। उण रै मन मे आई के वो इजनीयर री वऊ सू थोडी ताळ गप्पा मारतो पण वा वाडै रै आगे ऊभी कोनी ही अर उण री हिम्मत वी नै हेलो मारनै री नी हुई। इण मामले मे वो आपनै घणोई डरपोक अर घोचू जाणै। पण हां, इजीनियर री वऊ जद धारै तद उण ने हेलो पाडलै अर वो जदताई उणरै कनै नी जावै तद ताई वा वाडै रै विचाली अटक्योडी रैवै।

वो सिगरेट री डब्बी लेयनै, इणगी-उणगी जोवतो पूठो कुर्सी मायै जमग्यो। वै सोच्यो के वो इजीनीयर री वहू कनै दड़ाछंट क्यू नी जावै जदके वा उण रै कनै जद धारे तद आ जावै अर साहित्य री चरचा करण लाग जावै। वा उफतते पाण ई कैवे 'अरे म्हैं तो विसरगी के मनै उणा री पेंट री इस्तरी करणी है। अर वा भटसू आपरै काम मे लाग जावै अर वो मूडो उतारनै आजावै।

जे सिगरेट सू उण री आगली नी बळनी तो वो आपरै विचारा मे खोयोड़ो ई रैवतो। वो चिमक्यो अर नूवो सिगरेट जलायो। बरामदै मे आयनै ऊभो हुयग्यो। गोखो हाळनाई बंद हो। वद गोखै नै देखते पाण उण रा माईत मरग्या। वै नेहचो करियो —म्हैं काल सू पूठो म्हारी नौकरी मायै चलो जावूला। मिनख टालो नी रै सकै। सगळै दिन करै तो के करै? दफ्तर मे छापे री खबरा बणावै, किण री भली करै तो किण री मूडी करै। उण घड़ी ई उण सोच्यो के वी नै उण रै दफ्तर मांय पत्रकारिता सीखण नै आणेवाळी अपर्णा सेन सू ब्याव कर लैणो चाईजै? क्यू वै उण नै कोरो उतर दियो। निरास करी। आखर उण रै मागे की न की यो इण कनरे रै माय खटपट करतो रैवतो। रीस करतो, परेम करतो, टावर-टींगर जणावतो'''यी न की घोम्बो-कांजो होवतो रैवतो। आ तो वै बड़ी भारी गळती कर नाखी। अपर्णा सुद कैयो — म्हैं था सू परणीजणो चावू। वो पैला चकरायो। फेर वै उण मायळी छोरी नै कोरो उथळो दे दियो के वो किण भी छोरी सू ब्याव करणो नी चावै। इण वात पछै अपर्णा बेंगोईज दूजै छोरै सू आपरा गठजोड़ा कर नाखियो। वै सगळा नै कैय दियो के वा तुरत-फुरत ब्याव करणो चावै।

वो यौन ई अनमनो हुयग्यो।

खून

जासूसी कुत्तै सगळा सू पैं'ली छुरी री मूठ नैं सूंघी। पछै वो माळियै सूं हेठै आंगणै मे आयो अर आगणै सू नाठतो-नाठतो रिंदरोई कानी गयो। उठै वो अेक खेजड़ै रै हेठै थमियो···फेर डामर री सड़क माथै आय नै अठी-उठी चक्कर मारण लाग्यो।

उणरै लारै-लारै पुलिस इंस्पेक्टर, थाणैदार अर पांच सिपाई हा।

इस्पेक्टर सोच'र कैयो—"लागै के अठै सू सूनी कोई सवारी पकड़'र पारगट्टी हुयग्या। इण कारण ईं जासूसी कुत्तो अठै ठैरग्यो।

थाणैदार खासी देर बातचीत करतो रह्यो अर पछै इमरती रै घरां आयनै लास रै असवाड़ै-पसवाड़ै ध्यान सू देखण लाग्यो।

अचाणचक वींनैं आंगणै पड़्यो अेक बटण दिस्यो। थाणैदार झट करता बटण नैं उठायो अर इमरती रै कनै जायनै बोल्यो—"इण बटण नैं थू पिछाणै ?"

"नी पिछाणू।"

"आछी तरियां सोच'र कैवै ?"

इमरती सेठाणी बटण हाथ में लेय नैं ध्यान सू देख्यो अर कह्यो—"ओ बटण म्हारो तो कोनी।···पण होय भी सकै। म्हैं इणरो ध्यान नीं राखू।"

"थारै बेटा नैं दिख्यो गया नैं कितरा दिन होयग्या ?"

"पूरा नव दिन।"

"थारी किणी सू दुस्मणी ?"

"ना सरकार! म्हारो कोई सू दुस्मणी नीं। सारा भाखो अर सारा आवां। देखूं सुरेस भरनै सुख री नींद सोवां।"

··· बटारी

"थारी बीनणी कनै कुण-कुण आवता ?"

"कुणी आवतो कोनी।...बापड़ी घणी सूधी ही" के बेरो इसो कुण हत्यारो हुयो जिण इण गाय नैं मार काढी। म्हैं तो कैवूं के वी रै रू-रू में कीड़ा पड़ै...वो पाणी बिना तड़फ नैं मरै।"

इंस्पेक्टर बटण नैं जब्त कर लियो।

लास री पचनामो बणाय'र पोस्ट मारटम सारू अस्पताळ भिजवाय दी।

पुलिस नैं आ बात समझ मे नी आय री ही के सेवट इण हत्या रो उद्देस्य काईं होय सकै ? गहणो-गांठो है ज्यूं मोजूद हो। हत्यारै कमरै मांयली कोई चीज रै हाथ नी लगायो। फेरू ·

मकड़ी रै जाळै ज्यूं गुत्थी उळझती जाय री ही। सेवट ओ ई मैं दियो के पोस्ट मारटम री रपट आयां पछै आगै जांच करी जावै।

पोस्ट मारटम री रपट आयगी। रपट मे लिख्योड़ो हो के मौत दम घुटण सूं हुई। मारणै रै पैं'ली सूती मृतका रै सागै सहवास करयो। डील मांयं किणी प्रकार री चोट कोनी। मरया पछै छुरी सूं गरदन काटी।

इंस्पेक्टर सोचण लाग्यो के जे लुगाई सागै कोई जबरजिन्ना करै तो सरीर मांयं कठैई न कठैई खरोच इत्याद पकायत लागै। इणसूं ओ साबित होवै के मृतका रै सागै जबरजिन्ना तो नी हुई। दूसरो सन्देह ओ हुवै के मृतका रो कोई सूं पेच लड़योड़ो हो। वो मृतका रै धणी रै डर सूं रातै जावतां पाण आय धमकतो अर पाछो जावतो रयो। इण हिसाबै ई आ अणचीनी हुई लागै।

भरतो अर रोवतो-रोवतो हूचकं भरीज जावतो।

सी० आई० डी० इस्पेक्टर ब्यास वी रै घरां गयो अर नाथियै नै धारस देय'र समझावतां कह्यो—"अबै रोवण कूकण सूं की मतळब नी। थारै सहयोग सूं ई म्हैं कोई निरणै माथै पूग सकसा। म्हैं कैवूं जिणरो सही-म्हौ जवाब दो—के थांरी लुगाई री कोई रै सागै गठजोड हो?"

"ना इंस्पेक्टर जी वा तो बापड़ी घणी सूधी ही'''आपरै जीवन में चालती कीड़ी नैं भी कोनीं सताई।"

"साची-साची कहीजो। इणमे गपता-गोळी करस्यो तो थैं खूनी नैं बचाय देस्यौ।"

"म्हारै बाप री सौगन हूं कूड़ कोनी बोलूं।"

"थारी कोई सूं दुस्मणी?"

"नी सा!"

इंस्पेक्टर वी नै खरीमीट सूं देखता पूछ्यो—"आप दिल्ली कद पधा रया हा?"

"अेक हफ्तै पै'ली।"

"किणी काम सूं?"

"हा सा!"

"के काम हो?"

"म्हारै अेक भायलै खातर चीज-बस्त मोल लावण नैं दिल्ली गयो हो।" इंस्पेक्टर ब्यास उण भायलै री ठिकाणो लियो अर अेक सिपाई नैं इसारो कियो।

पछै नाथियै नैं घणो ऊंचो लियो अर खोद-खोद नै सवाल पूछ्या पण काम री कोई बात हाथ नी आई। सिपाई आय'र बतायो के नाथियै रै भायलै री मणिहारी री दुकान है अर वी कह्यो के नाथियो वी रै काम सूं दिल्ली गयो हो।

ब्यास फेरूं सोचण लाग्यो के खूनी बडो चालाक दीसै। गनियै री तीजोड़ी पग लाधै तो खूनी री ई अतो-पतो लागै। पण ब्यास हिम्मत नी हारी।

वी रै दिमाग में बटण घूमण लाग्यो। ब्यास सोच्यो के अबै तो बटण

रै सासरै ई की पती लागै ना लाग सकै।

उण सहर मे दरजी री दुकानां घणी नी ही। इंस्पेक्टर वो बटण लेय नै अेक-अेक दुकान माथै गयो अर वी बटण बाबत पूछ्यो। अेक दरजी बतायो कै इण किस्म रा बटण उणरी दुकान मे काम लिया जावै।

इंस्पेक्टर दरजी रो रजिस्टर काढ'र देख्यो। नाव बाचतै-बाचतै उणरी दीठ अेक नाव माथै पड़ता ई रुकगी। दो-तीन वार बाच'र उण सोच्यो कै बटण नाथियै रो ई होय सकै। पण नाथियो तो दिल्ली गयोड़ो हो अर वो कानरी री लुगाई रो खून क्यूं करैला ?

पण सायत वो दिल्ली गयो ई नी हुवै अर कूड़ बोलतो होवै तो 'नो ...तो ...।

इंस्पेक्टर ध्यान रो दिमाग खासा जळ सूं काम करण लाग्यो अर वो अचाणचक नाथियै रै भायलै री दुकान माथै पूगग्यो। उण भायलै नै थाणै चालण रो कह्यो।

दुकानदार टैरियो वाणियो। थाणै रो नाव सुणता ई बी री धोती ढीली होयगी अर वो थर-थर करतो धूजण लाग्यो। बोल्यो —"मनै थाणै क्यूं लिजावो ?...म्हारो काई कसूर ?"

इंस्पेक्टर उणनै धमकावता कह्यो —"वा तो लाडी थाणै जावणै सूं ई जाणसी। घणा दिना सूं कूड़ पेट मे छिपाय नै राख्यो है।"

"म्हे तो चालती कीड़ी नै ई नी दुखाई, म्हे तो सफा निरदोस हूं।"

"तो पछै दोसी कुण है ?" इंस्पेक्टर गरज्यो।

"नाथियो! ...म्हैं तो उणरै कैवण सूं कूड़ बोल्यो कै वो दिल्ली गयोड़ो। दरअसल मे वो दिल्ली गयो ई कोनी वो अठै ई हो।"

"आ बात थनै कचैड़ी मे कैवणी पड़सी नी तो तनै ई जेळ जावणो पड़सी।"

इंस्पेक्टर सोवन रा बयान लेवण नै नाथियै रै सासरै पूगो।

नाथियै रै सासरै वाळा री माली हालत चोखी ही। नाथियै रो सुसरो मरग्यो हो। बडोड़ै साळै बतायो कै म्हे च्यार भाई हा...बारै आ अेक ई बैन ही। कमला घणी सैणी अर सूधी ही। जिण वखत उणरो ब्याव कियो तद घर री हालत माड़ी ही...इण कारण ब्याव मे बेसी खरच नी कर सक्या। पछै

थांरो बैंसार टीक चालण लाग्यो । अबै बे गोरा सुतो है । धंधो टीकचालै।"

वो बोल्यो—"कमला री अकाळ मौत हुई। जिणसूं म्हैं सगळा घणा दुखी हां। म्हारी बैन रो चरित्र निरमळ हो, वा सती-सावित्री ही।"...

"थांनै मालूम रैवणो चाईजै के हत्या सूं पै'ली कोई आदमी उणरै सागै सहवास कियो हो ?"

"राम जाणै...पण कमला रै चरित्र बाबत कोई बात जचै कोनी।"

"अेक बात बतावो...थांरी माली हालत टीक हुया पछै थांरै बैनोई नाथियै सागै किण तरियां सबंध रह्यो ?"

"टीक रह्यो। बै मोकळी बार आवता अर कैवता के मनै अेक मोटर साईकिल दिराय दो।"

"था मोटर साईकिल दिराई ?"

"नी सा !"

इस्पेक्टर सोच में पड़ग्यो। अबै बीनै विस्वास होवण लाग्यो के खून नाथियै ई करयो। सोचण लाग्यो...नाथियो दिल्ली नी गयो...सासरै वाळा मोटर साईकिल नी दिराई...बटण उणरो ई है...कमला रै सागै हत्या सूं पै'ली कियोड़ो सहवास...मरजी सूं कियोड़ो सहवास...खून उण ई करयो दीसै।"

पुलिस आपरो जाळ नाथियै रै च्यारूमेर कसती रही। अेकदिन उणरै अेक मुखबिर माळण आय'र बतायो के नाथियै री पाछी सगाई होवण वाळी है। दायजै में बीस तोला सोनो, ग्यारै हजार नगद अर अेक मोटर साईकिल दिरीजणी तै हुई है। छोरी काळी दराक है।

अबै इंस्पेक्टर व्यास रा कानड़ा सजग होयग्या अर दिमाग तेजी सूं काम करण लाग्यो।

झट वारंट कढाय नै नाथियै नै पकड लियो। नाथियो हाक-बाक होयग्यो अर उणरी मां इमरती पगा पडती बोली, "के म्हारै बेटै नै क्यूं पकडो हो।" इस्पेक्टर अर थाणैदार नाथियै नै थाणै में लिजाय'र घणो ई ऊंचो-नीचो लियो पण नाथियो टस सूं मस नी हुयो।

सेवट थाणैदार अेक तगड़ै सिपाई नै बुलाय'र कह्यो—"इण कमीण नै ऊंधो नाख'र मिरचां भर दो।"

झपीड देसरी नाथियै रै गाल माथै ऊंधै हाथ री अेक झापड पड़्यौ तो उण नै दिन रा तारा दीसग्या। सेवट वाणियौ ठैरियौ···झट पगां पड़तो बोल्यौ—"मनै माफ करावौ" म्हैं साची-साची कहस्यूं "मनै मारो मती, थानै हाथ जोड़ूं।"

"सुण नाथिया म्हानै थारै भायलै सं की बताय दियौ है कै तू दिल्ली नी गयौ···थै सासरै वाळा कनै मोटर साईकिल मांगी पण थनै नी मिली·· इण वास्तै थै घणी चालाकी सूं आपरी लुगाई रौ खून कर कढियौ।··· जिणसूं तू दुबारा ब्याव करनै मोकळो धन-माल सागै मोटर साईकिल लाय सकै।···अबै तू जे कूड़ बोल्यौ तो खाल उधेड़ देस्यां, नीं तो तनै बचावण री कोसिस करस्यां" साची-साची बताय दे!"

नाथियै री आंख्यां आंसूवां सूं भरीजगी। वो गळगळै कंठ सूं बोल्यौ—"म्हैं म्हारी निरदोस अर सूधी लुगाई रौ खून कियौ। 'इणरौ कबै दायजो हो। म्हैं कमला नै घणी ई समझाई के तू आपरै पीरै सूं सोना गैह्णा अर मोटर साईकिल लाव, पण वा मानी कोनी 'अेक दिन सेठ कनजी सा मनै कह्यौ कै नाथियाजी जे थैं दुबारा ब्यावना तो म्हैं मोकळो माल-ताल अर मोटर साईकिल देय'र थानै म्हारी बेटी परणाय देस्यां।' म्हारी आंख लोभ में पड़ग्यौ अर म्हैं ओ अपराध कर दियौ। ' म्हारी भोळी बापड़ी··· निरदोस लुगाई ''पण म्हारी मति मारी गई। उण दिन म्हैं "अंधा कानून' सिनेमा देख्यौ अर म्हारी मति भ्रष्ट होयगी ' म्हारै मन कुबुध आयगी··· म्हैं कमला नै दिल्ली जावण रौ कह्यौ पण गयौ कोनी। म्हैं वी नै पूछ्यौ कै थारै कै लावूं? तो वी बापड़ी अेक हार मंगायो।···पैक म्हैं घरां सूं रवानै होयग्यौ अर अेक दिन पररै सिटी बई आय'र कमला नै हेलो दियो। कमला धीरै सीक दरवाजो खोल्यौ। वा गैरी नींद में ही। म्हैं वी रै माथै सूतौ अर अचाणचक वीं रौ गळौ मोस दियौ।···पछै छुरी सूं गळो काट'र नाटग्यो!···सड़क माथै आय'र अेक ट्रक आवतो। पण्यो नीं को बहाण किंयां टूट'र पड़ग्यो?"

बाप अर बेटा

म्हैं सिगरेट री डब्बी खोल'र देखी। उण में सिगरेट कोनी ही। म्हैं म्हारै खूजै नै जोयो। खूजै माय मोटा-मोटा सा तीणा सा लाग्या। म्हारा हाथ-पग ढीला हुयग्या। बाप जित्तो टोकै उत्ती म्हारै सिगरेट पीवण री आदत बधती रैवै। म्हैं आजकल बाप नै खुलो कैय देवू कै म्हैं तो सिगरेट पीवूला ईज। बाप म्हारी निसरमाई सू बडो दुखी होवै।

म्हारै मार्गे अेक बडी ट्रेजडी आ है कै म्हारो बाप मनै हाल नाई टींगर जाणै, पण म्हैं अेकदम मोटयार होयग्यो हू। मनै दुनियादारी रो ग्यान हुयग्यो। म्हैं कित्ता ई अेडा उपन्यास बाच नाख्या जिका मे प्रेम री मूई जित्ती मईन बाता जणायी गयी ही। जद सू साठोतरी पीढी री कहाणिया बाची तद सू हू कित्ती ई नूवी बाता जाणग्यो।

म्हारै बाप मनै ब्रह्मचारी राखण खातर घर मे नौकराणी री भी छुट्टी कर नाखी। अेकदम विचित्तर है म्हारो बाप। पण म्हैं भी कम कोनी। म्हैं भी उण रै आगली कर राखी।

जद सिगरेट पीवण री मागोडी मनस्या हुयी तद म्हैं म्हारै बाप रै खूजै मे हाथ घाल्यो। रिपिया रै कमी मे म्हैं बाप रै खूजै माय सू दस-पाच उडा लेवू अर मौज-मस्ती मारू। अबार भी म्हैं उण रै खूजै माय हाथ घाल्यो तो दस रै नोट रै मागै अेक प्रेम-पत्र मिल्यो। कागद लुगाई रै हाथ रो लिख्योडो हो। म्हैं वेगो-वेगो कागद खोल'र बाच्यो। बी मे भात-भात री बाता रै सिवा अेक बहोत ई खास बात या ही कै उण लुगाई लिख्यो हो कै बा परणीजणी चावै। कागदबहोत ईज मोवणो भासा मे हो। म्हारै मायनै अेक धमाको छूट्यो के अर बापजी तो छ्योडा रस्तम निकल्या।

छोरै नं ब्रह्मचारी राखण नं कांटां री बाड अर खुद···? म्हैं कागद नं वार-बार वाच्यौ। छोरी उगणीस बरस री ही। म्हारै बाप नं सालीमार रेस्टरां मे साढ़े ग्यार बजे बुलायो हो। उठै वा म्हारै बाप री अडीक राखैली। छोरी आपरो फोटू भेज्यो कोनी पण म्हारै बाप आपरो फोटू भेज दियौ हो जिकै नं छोरी पसद भी कर लियौ।

पण म्है [illegible]ेक नूवी चाल चाली।

म्है [illegible]ईज बीद बण'र रेस्टरा रै आगै पूगग्यौ। आवती वेळा बापजी रै खूजै माय सू पचास रिपिया फेर काढ लिया। म्है रेस्टरा रै इणगी-उणगी फेरा लगावण लाग्यो। घणो वेगो आयग्यौ हो इण वास्तै म्हैं म्हारै समै री अकारथ हत्या करण लाग्यौ।

म्हारो भी ठाट देखणै जोगा हा। टैरैलीन री पैंट अर पूरी बावां रो कमीज। गोल्डफ्लेक सिगरेट। जीवणै हाथ माय घडी। हिवडै माय विचित्तर सी अनुभूति होय रयी ही कै बूढ़ियै सू परणीजण आळी आ छोरी कुण है? कैडी है?

छोरी री अडीक मे हू बेनस्मोकर वणग्यौ।

मनै म्हारो बाप दीख्यौ। हूं अेकवर तो डरग्यौ। फेर हू बोल्ड हुयग्यौ। बाप सू चोनजर नी की। दार्शनिक रै मूड मे सिगरेट पीवतो रयौ। थोड़ी ताळ पछै म्है म्हारै बाप नं जोयौ। वापडो अेक थम्भै रै लारै लुकग्यो हो। म्है बाप री सगळी खुसर-फुसर देख रयो हो। पण हू रेस्टरा रै बारणै रै आगै थम्भै री जियां ऊभो हो। म्हैं देख्यो म्हारो पूजनीक बाप मुट्ठिया भीच्योड़ो ऊभो हो अर उण रा होठ फुर-फुर करै। उण रो उणियारो-उणियारो नी रह, अेक खोरो हुयग्यौ।

वाह! उण री पोसाक राजवी ही। जोधपुरी कोट अर पैंट। सगळा केस काळा दर्राक। पक्कायत खिजाब लगायो है। म्हैं म्हारै बाप रो जायको लेवतो रयौ।

ठीक सात बज'र दस मिनटा माथै म्हैं रेस्टरां मे बडग्यौ। सवा सात री टेम ही।

पिछाण करणै रै वास्तै छोरी लिख्यौ हो कै थारै हाथ माय गुलाब रो फूल हुवैला अर म्हारै हाथ मे गुलाब रो फूल हो।

थोडी ताळ में अेक मोट्यार छोरी आई। इण रो रंग गूगळो हो पण डील घणो चोखो, गुदगुदो!

वा मुळकती म्हारै कनै आई।

म्हैं म्हारै बाप रो नाव बतायो।

वा म्हारै कनै बैठती बोली, हू थानै पिछाणगी।

"किया?"

"आपरो फोटू म्हारै कनै है। पण फोटू भोत ईज जूनो है।"

"नी तो।" म्हैं थोडोक नाटक कियो।

"देखो।" कैयपरी उण आपरो पर्स खोल्यो अर अेक फोटू म्हारै सामै राख दियो।

म्हैं च्यारू खाना चित!

म्हारै बाप तो कमाल ई कर नाख्यो। म्हारै मोट्यारपणै रो फोटू भेज दियो। आ बात घणी मावळ ही कै उण रो उणियारो म्हासूं घणो मिलतो हो। उण सू म्हारो वैम भी हो जावतो।

हू उण कानी देख'र मुळक्यो। फोटू नै खूंजै में घालतो हूंतो बोल्यो, "आ गड़बड़ उतावळ में हुयगी। म्हैं थानै म्हारी नवी तसवीर दूला अर म्हारी असली नाव भी हूजो है।"

बे मनै घणै चाव सू जोयो। वा मुळकती हुई बोली, 'अबै तो मनै फोटू ई लेणो पड़ैला।'

म्हैं झेंपग्यो।

सावचेत होय नै बोल्यो, "जी मैडम, अबै म्हारो [illegible] [illegible] दूंला।"

पैर बिना माथै री बाता होवती रही। इण बीच म्हैं ओ [illegible] [illegible] लियो कै इण थार्मिक लेडी सू म्हैं [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible] [illegible] है ए बन।

इणी वगत म्हारो पूजनीक बाप रेस्टरां में [illegible]। उण रो [illegible] पूजनीक हो। आपरा लोग उण [illegible] रही ही।

म्हैं ओकणी [illegible] [illegible]।

बो म्हारै [illegible] टेबल [illegible] आयनै बैठग्यो। म्हैं उण [illegible] [illegible]

छोरी चिनीमीक रीमाणी होवनी म्हारै बाप नै जोय नै बोली, "कूवै मे माव नी दण कुहड्‌डै नै, औ आपणै पैले मेल नै राहू बण'र गिटक्नो चावैं···पररायन औ आपणै पूरब जनम रो बैरी है।"

म्हैं उण रै लिपरिटक रगयोड़ै होटां पर आगली मेल दी। बा घुर डुगगी।

म्हैं जोयो के म्हारो बाप गयोपरो है।

□

जठै निजर टिकै

घर। अेक गोखे रो धोखटो। खुलियोड़ा किंवाड़। अेर खरचप्पर। खरचप्पर रै लारै ळेवड़ां उतरियोड़ी भीत। ओजू म्हारी निजर खरचप्पर माथै। खरचप्पर माथै सुगलो घदरो। अेक ऊभी लुगाई। खरचप्पर सूं नेड़ी भीड़ी-भीड़ी। अमूझियोड़ी। उण रा मगर। झुकी नस। ऊंचा हाथ। नीचे पड़ता हाथ। खरचप्पर। घदरो। लुगाई री आंख्यां। माठी-माठी सी आहयां। चदरे माथे जमियोड़ी आंख्यां। घदरे माथे धब्बा। धब्बो माथे इण री निजर। हमैं म्हारी निजर मांय उण री नस रो पाछलो हिस्सो। उण माथैं पसरियोड़ो तावड़े रो टुकड़ो। घर खायोड़ी। घर नै छूवती उण री पतली-वाकळ आंगल्यां।

अबै म्हारी निजर में उण लुगाई रो बिचलो हिस्सो। उण री मैंगी थोड़िम। टूटोड़ा बट। सळ पड़ियोड़ी मोती। ढीली-ढीली नै लुळी-लुळी।

ओजू खरचप्पर। घदरो। सुगलो घदरो। दो हाथ। घदरे रो बो हिस्सो जकै रै माथे घाव जेड़ा धब्बा। आंगल्यां। मायां जाणी ज्यूं आंगल्यां। धब्बा। ममळोड़ा धब्बा! अणमणा!

आंख्यां। अणमणो उणियारो। हावरनैणी। हाथ। बिगड़ी गाळ उठता हाथ। आवळ-बावळा।

टाबर। अेक, दो, तीन, चार। बोळा-सूका। मुरझाय। माथा ई माथा। लुगाई। टमकती लुगाई। टाबर। माथो। माथा रै ऊपर हाथ। टाबरां रा खुलियोड़ा बाका। ज्यूं बोलै — मा…मा…मा…।

दो हाथ। हाथां मांय रूखा रोटी। टाबर। उणियारा। कमल जेड़ा उणि-यारा। पग। कुम्हार होवता पग। मरकाड़ो। लाली लुगाई। नखर बैठि

देखती बणी लुगाई। झुकती लुगाई। हाथा मे परथनो। खाली खरचप्पर। कनो कियोड़ो परथनो। नूवो चदरो। मंग टीकठाक।

पसरती निजर मे सगळो खरचप्पर। खरचप्पर माथे मूडो उतारियोड़ी वा लुगाई। मूंयोडी लुगाई। मुडदी-मुडदी लुगाई ''।

गोखे मे वैसतो तावड़ो। अेक दूजो मोटचार। वैसती लुगाई। ऊभी होवती लुगाई। अणमणी लुगाई। उण रो मूखो उणियारो। पाउडर-स्नो सू चर्दाळियोडो उणियारो। अेक नूवो उणियारो। मोटचार। उण रे कोट रो खूजो। खूजे मे हाथ। हाथा मे कुछ नोट। लुगाई रो हथेली मे पसरियोड़ा नोट। लुगाई रो सीनो। ब्लाऊज। नोट झालोडी आगल्या।

लुगाई। राजी हुयोडी लुगाई। गाळ। दो चीप्योड़ा मूडा। चीप्योड़ा शरीर। लुगाई रो उणियारो। पसीणे मू भीज्योडो उणियारो। मोटचार रो तरनाटो करतो सरीर। राजी-राजी सी आख्या। लुगाई रो उणियारो। मुरदो पीळो जरक उणियारो ? माळम पडे वा कुण दूजी ई है, वा कुण दूजी ई है, अेक उणियारे रा दो रग' कमाल !

ऊभी होवती लुगाई। रग बदळती उण री आख्या। धिराण माय डूबोडी उण री आख्या। म्हा माथे झपटती उणरी आख्या। लुगाई री नस। गोखे रे वार्ड नस। थूकणो। खखार'र थूकणो थूक मूगा किवाड '''ओटाळियोड़ा किवाड'' मुडदा-मुडदा 'अणमणा-अणमणा ''।

□

जीवळी री उणियारो काळो दराक नो हो ईज, अर अबै खल्ला रै कूटियोड़ो नो लागण लाग्यो। जाणै मावनै सू वा घणी दुखारी हुवै।

"अरे, गैली।" बावो घणो हेनाळू होयनै बोल्यो, "तू ई पल्लो खीचनै बैन जावैली जद ये मुरख री कुण मार-सम्भाळ करैला ? बी रो सुभाव तो गडक री पूछ जिसा है। जे वा सीधी हुवै नो बीरो सुभाव सुधरै। फेर भी आपा नै आपणो धरम निभावणो पड़सी।"

जीवली मायली पीड नै दाब'र खोरै ज्यू साते सुर मे भड़की, "म्हारै सवै इया लगळा नै चौनळाई लेजायनै बाळ काढो।" बीरो ईसारो सगळे दावरिया कानी हो, नैणा डबर डबर भरग्या। गळै मे धमका खीला ज्यू खूभण लागग्या। दो-चार पळ थम'र फेरू बोली, "म्हैं मे भी तो जीव है, कोई भाटो नो कोनी। बाप बाप नई बणियो तो दुसमण तो नई बणै। बावा ! म्है उफतगी हू। म्है सू अबै ···"

अेक मुड़दी-मुड़दी सी लुगाई नाक ताई री घूटो काढोडी आयनै बाई रै अगाडी ऊभी हुयगी। उणरो चेरो पीळो जराक हो। घणा दिना री मादी लाग री ही। खाड़ा री तरिया आग्या·· खुड्डा पडियोडा गाल ···सगळो डील निणकै ज्यू पतळो···अर पेट ··पेट ढोल ज्यू फूलियोडो। देखते पाण ई काळजो पसीज जावै। दया सू भर आवै।

तावडो वी लुगाई रै लारै हो, जिकै सू छाया जीवली रै माथै ही। जीवळी हळवा-हळवा आपरी मूडो उठायो। मा सू चौनजर होवते पाण ई बीरै मायनै अेक अजीब सी खळबळ होवण लागी।

मा बोली, "म्हैं तनै हाथ जोडू म्हारी लाडेसर ! ई दफे म्हारे कैणै सू थारै बाप नै किणी डागधर नै दिखा दे···बीरो इया तड़फणो म्हैं सू कोनी देख्यो जावै ?"

जीवली एक दफै फेर मा कानी जोयो। उणरी मा अगणित दुखा सू अणमणी अर उदास ही।

"तू कैवै तो हू थारा पग झाल लू।" मा गळगळी हुयगी।

बावो बिचाळै बोल्यो, "हमे तो उठग्या। अरे तनै जलम देवण आळी थारै पगा पड़ै है, अैडी कटोर ना बण।"

बा सोचण लागगी। इयै मनै जलम देय परी अेक भाटो ई इण भीम

मायं वधायो है । म्हैं के सुख पाऊं ? म्हारै जलम री के सारथकता है ? ···के भदरक है ?"···

"हाल लाडेसर, हाल ! मा फेर कैयो । जीवली ऊभी हुई । बाप नैं जायपरी जोयो । मूंडो अर हाथ पग सूजग्या हा । बा एक सबद भी बोली बोली । ओढ़णी सेयपरी निसरगी ।

बन्नै एक फूटी कोडी कोनी ही । बा इणगी-उणगी पाच-दस रिपिया रैं खातर धक्का खावती रयी । फेर आपरैं सेठ रैं छोरैं कन्नैं पूगी जठै बा मजूरी करती ही ।

मोट्यार ! रग गावळो पण दीमण मे फूटरो !

सेठ रो छोरो बीनैं देखने पाण हरियो करस हुयग्यो । बोल्यो, "क्यिा आई जीवली ? थारो मूंडो उत्तरियोड़ो क्यू ? सैंग चोखो तरिया तो है ?"

जीवली उणरैं कानी जोयो । बी नैं वो सपोळियो लाग्यो । घडी-घडी होठा माथे जीभ फिरातो ।···जीवली उण सू घिन करै पण आडी टैम मायै वो सपोळियो ई सदैई कान आवै । विनती सू बोली, "कुंवर सा ! बाप घणो मादो है, दस-बीस रिपिया रो जुगाड करदो तो घणी किरपा हुवैली, मजूरी मे भरवाय दूली ।"

सपोळियो आड्यां घालतो रयो। फेर जीवली नैं लाग्यो वा जमी मांय धस रयी है ।

सिञ्या तांई उणरैं बाप री मादगी कम हुयगी । बा आपरैं गूदडा मायै पड़गी । मा घणो ई कैयो—"भावै जित्तो खा लै" पण वै एक कवो ई नी लियो । बीनैं लाग्यो के बीरैं चारूं मेर बासती लाग्योडी है, धूवो ई धूवो है जिणमें बीरो जीव घुट रयो है । कदैई-कदैई बा नेहचो करै—बा आपरैं घर नैं छोड'र कूवो खाड कर दै ··ई जिनगी सू तो मौत भली !

सिझ्यां रात मांय घुळगी ।

सगळै टाबर-टीगर बीरैं अमवाड़ै-पसवाड़ै आयनै सूयग्या ।

जीवली सोचण लागगी—ओ कैडो बधेज है ? ओ बापू क्यू दारू पीवै, क्यू इसपरिट पीवै···क्यू नी इयनै सिपाई अपड़ै···क्यू ओ इत्ता टाबर जगावै । अर सगळा सू बेसी बात आ कै खुद क्यू इण सगळां रैं खातर

मरे-मरे। हजार दफै बाप नै समझा दियो, तू नी कमा सकै तो अस्पताळ वाळनै समझ आप जिकै सूं मा वापडी री तो इण जणनै रे रोग सूं पिंड छूटै। '''पण बो नी मानै। वा गळगळी हुयगी। इण सगळां रै खातर वीं रो ब्याव नी हुयो। घर री आ दशा देखयगी वै गोपाळियै नै साफ कै दियो—"म्हैं अबार नी परणीजूं ना। तू थोडोक समझ - म्है जे इण घर सूं जाणो होय जावूंली तो म्हारा मैण भैण-भाई भूखा मर जावैला ' म्हारी मा जियानीत मर जावैली'''ओ घर चौपट हुय जावैला । फेर गोपा-ळियां उडीकतो-उडीकतो थाकग्यो । दूजी सूं फेरा खा लिया। वी दिन जीवली थमर-चमर गरनाटे मे रोई ही पण किणी जदीठ शनित सूं बा बन्धियोडी ही। चावन्ते थकैं इयै घर नै नी छोड सकी। फेर बी नै लागगो के अैं सगळै घर आळा वींनै दुधारू गाय समझै। वीरै घडी-सुख नै भी नी देखै। मा, बाप अर अै भाई-बैण सगळै वीं री थाप'र सोमण करै'''अर वै अचाचूक री जाणियो के वीरै डील माथै सगळै चीचड ही चीचड चिपग्या है। अैं घर आळा ''वींनै लागगो कै माणस नई चींचड है वीं रो लोई पीउणिया चींचड ' वा आकळ-बाकळ हुयगी। अेक वितृष्णा सूं भरगी'''" म्हैं सगळा नै मसळ काढ न्हाखूंली 'घिरणा ही घिराण '।

उण ताळ ई वीं री मा आई। आयनै बोली, "लाडी, बापडो थारो छोटोडो भाई भूखो है। थोडोमोक दूध लायदै नीं ?"

बस, वा रीस रै माय काळी-पाळी होयनै बरसी, "सैंग जणा मन्नै ला क्यूंनी जावो थें घर आळा क्यूं म्हारो लोई पीवो'''?" वा बसड-बसड रोवण लागगी। मा छाई-माई हुयगी। धीमैं-धीमैं एक विचतर सरनाटो पसरग्यो। ना जाणै क्यूं जीवली ऊभी हुई, तपेली हाथ मे लेवी अर मा रै गोळै उणियारै नै जोयपरी अबोली-अबोली दूध लेवण नै नीसरगी।

पण फेर भी उणनै लाग्यो के उणरै डील माथै चींचड़ ई चींचड चिपियोडा है जर वीं रो लोई पीवतो जावै है।

□

मुन्न गो सूरज

बीनै देखतेवाल मन्नै गोविन्दा री होवन लागगी। बीरै उणियारै री हवा
दिखती ही। भूरणी दीसन लागगी ही। कई ताळ तांई म्हारी बोलनी ब
हुयगी। फेर मैं मेघली नै पूछ्यो, 'आ पना किना सू मांदी है ?'

मेघली म्हारी कानी जोयो अर बीरै सगळै डील मायं निजर नाखनी
बोली, 'मांदी तो सारथै कई दिना सू है ! कँवर सा ! थे तो जाणो हो कै
अजकाल बैनजी सगळी बातां अणूती करण लाग्या है। इता ऊपरछाळा
हुयग्या के बन सौं कँव नी सकू। गुई नैं ऊधी समझै। सगळै घरआळा
मनाय मनाय नै थाकग्या पण बैनजी तो चिकणी मटकी हुयग्या। ईं बात
सुणी अर बां कान काड़ी। अेक ई रट लगावै—म्हारै मायं सगळै चोतोळई
पूगयोड़ा है, म्हैं जद ईं लोगा सू कीं भी सनेव-सम्बन्ध नी राखणो चावू फेर
अै क्यू म्हारै लारै छिया ज्यूं लागै ? कदैई हू इया लोगा रा मांजना मिट्टी
में मिलाय देसू।'

'पण बात कै हुई ?' म्हे मेघली नैं पूछ्यो, 'सुण मेघली, तू चमेली बैन-
जी री जूनी आदमण है, मन्नैं साची बात तो बता ?'

'पाणी !' चमेली टसकतै कैयो। मेघली भट सू चमचियै सू पाणी
पायो। चमेली आह्या बद क्योड़ी ई बोली, 'कुण आया मेघली ? जे
म्हारै घरआळा आया हुवै तो बानै धक्का देयनै काढ दै। अै सगळा जणा
डाकी है, मन्नैं लक्ड़ी ज्यू सुळाय-सुळाय मारणो चावै।…पण म्हे अबै इया
लोगा रै कूड़ै प्रेम रै चक्कर में आयनै नी मरणो चावू।'

बीरै चुप होवतै पाण म्हे बोल्यो, 'चमेली ओ तो मैं गोविन्दो हू।'

'गोविन्द सा, थे कद पधारया.?'

'म्हैं तो अबार ई मरगी हूं ? पण थे औ कांई डांड बणायो है ? सूण'र लोग हुयग्या। सगळा लोग बोल्या।'

'थैं जिको नेकदलियो है, थांनै पूरो बणग्या। म्हैं जीवणो नीं चावूं ? इण नरिया जीवण में कीं सवारथ कोनी ? फेर थांनै रातड़ो बारै निसारण-जाळो थांमी धम्-धम् धावण लागी। हाथनी उठगी। म्हारै देखतै-देखतै वा लोप हुयगी।

फेर म्है थांनै कन्नली अन्तराळ लेयग्यो। कन्डी मैनत अर देव राग'र बींरी जान बचाई।

वा पोटी ठीक हुई जद अेक दिन बोली, 'थे मनै क्यूं बचाई ? अरे ! म्हारै म्हासैर डारी-डावणी भेळी हुयनै मनै गिटणो चावै।' अर वा सळभळा आंख्या सूं मनै देखण लागगी।

हूं इणरो सगळो जीवण बांगी नरिया जाणूं। जलमतै पाण घर माय गोपम मच्यो हो। चमेली आपरी मा री छठी बेटी ही। बाप अर दादै-दादी नै ग्यू ई ठा पड़ी कै घर में फेर टींगरी हुई है त्यू ई दादी गायपो चालण लागगी। फेर तो वा अर उणरी मा रो जीवणो दोरो हुयग्यो। पण दूजै बरस जद बींरी मा छोटै नै जनम दियो तद कीं दोनूं नै सोरप आई। फेर अेक पछै अेक करतां पांच भाई जलम्या। पांचवें भाई नै जनम देवतै पाण मा राम-राम सत हुयगी। बाप दूजी परणीजणो चावतो पण नौ टावरां रै बाप नै सुंदरी बेटी कुण काढ'र दै। फेर बाणिया में ? दादी बापड़ी रो तो बुढापो ई खराब हुयग्यो। सगळा टावर कुकरिया ज्यूं कुरळावता रैवता अर वा ईंण रोवती-भींकती यांनै पाळती। घर के हुयग्यो हो जाणैं नरक।

आ बात सोळै आना साच पड़ती है के बाणियै रा भाग पत्तै हेठै हुवै सो चमेली रै बापू रो धर्या चांदां चालण लाग्यो अर वो अेक दिन सगळा री आंख्या मे धूड़ नाख'र कन्नलै गाव में जायनै अेक गरीब री बेटी सू फेरा रवालिया। रिपिया तो हजार तीन लाग्या पण चमेली रै बाप रो रडुवापणो मिटग्यो।

फेर तो दोय घर हुयग्या। चमेली भिणनै मे घणी चोखी ही।'''बाप महीनै में दो-पौ अढाई सौ देवतो। इतै कम रिपिया में किया पार पड़ै ? चमेली मास्टरनी बणगी। सगळै परिवार नै पाळियो-पोखियो। फेर बीं॰

अे० कर दियो। जद ताई दो भाई कमावण लाग्या। भाई मा रै भी चार टाबर हुयग्या ''बाप रा मी हुळ थाकग्या इण वास्तै चमेली बाप कनै की भी नईं मांगती।

दो भाई परणीजग्या। थोड़ीसीक सुख सोवनी हुयगी। जद अेक दिन वीनै के जची के वा काच लेयनै वैगगी अर आपरो मूंडो देखण लागगी। मूंडो देखतैंपाण ई उणरो हियड़ो चिरळावण लाग्यो। वीनैं खुद सू घिराण हुयगी। सोचण लागगी—वा इत्ती नूंठी है। वींरो चेरो मंरो इत्तो सूगतो है। फेर तो वैं आपरो नगनो दीन काच माय उतार काढियो। पीड़ रा लैरा उठग्या—वा किती मुडदार है। ' वा इत्ती कोजी है ! इत्ती कोजी नै कुण परणीजसी ? औं लीरा ज्यू बळता सुवाल वीनैं अणमणी बणाय नाखी। फेर तो माय तेवणो दोरो हुयग्यो। वैं कई दफै आपरैं भाइयां नै इसारो करियो के थे म्हनै भी परणावण री जुगत बैठावो, म्हारो थकै जोबन गुमाया पछै घर मडावासो के ? पण भाई तो आपरै सुखा मे मस्त। सेवट अेक दिन वैं आपरी बडोडी भौजाई नै कैयो—'अबै इण घर री गाडी चीलें माथै आयग्यी है, म्हारी भी ऊपर ''।

भौजाई इसारो समझगी। नाझ पड़तै पाण वा आपरै धणी सू बोली, 'थे बाईसा नै परणावो क्यू नी ?'

भाई बोल्यो, 'या परणीजै ई कोनी।'

'कुण कैयो ?'

'कैवै कुण ? म्हे समझो कोनी ?'

'थे अबै वेगोमीक छोरो देखनै''।'

'फालतू माथो मत खाया कर।' भाई धीमैं-धीमैं कैयो, 'थारै माय अकल तो चिन्नीमीक है, अरे ! इत्ती मुडदारअरकोजी छोरी रै वास्तैं वींद मिलसी कठै ? दो-चार जगा बात चलाई ही, लोग तो वीनै टी० बी० री मरीज कैवै''।'

फेरचमेली आपरै छोटोड़ी भौजाई नै इसारो करियो। छोटोडी भौजाई चमेली री घणी बड़ाई करी अर कैयो, 'नणद म्हारी, मैं सगळा तो थारै उवारियो रो पाणी पीवा। थारी तो वडी घूमधाम सू साधी कराला। पण वैं आपरै धणी नै कैयो के थे मूडै री पाटी बांधियोड़ा बैठ्या रैया—जद

वीं री आंख्या रै अगाड़ी तिनल्या सी उडण लागगी। आमूड़ा री तिनल्या। वीं आपरो मूंडो हथेल्या माय लुका लियो। वा डागळै मायै गयीपरी क्यूकै आगणै रो मरनाटो वीं नै सतावण लाग्यो हो।

आज दिनूगै सूं ही वा उफनगी ही। आपरै परिवेस अर माच सूं। उण माच सूं जिणरो लखाव वीं नै आज पैली दफै हुयो के वा आपरै धणी री लुगाई कोनी, माथण कोनी, वा तो खाली अेक भोगण री चीजवस्त है। इण वात वीं नै घणो दुख दियो। उण रै काळजै मे आ वात घड़ी-घड़ी वावळियै रै तीखै कांटै ज्यूं खुभण लागगी।

वीं नै आज पैली दफै इण बात रो भी लखाव हुयो के कुदरत मिनख सूं बगावत करै चाये वा बगावत धूड़ रै ढिगलै ज्यूं भलै ई मिट जावै पण वा हुवै पक्कायत है। कदेई-कदेई ऐड़ा भी पल जनम लेवै है जिकै रो लखाव कैनेई कोनी हुवै।

आज ऐड़ा ई पलछिन वीं रै अर वीं रै घरवाळा रै वीच जलमग्या हा। अचाणचक अर अनायास। उण वखत वा जूंझारू दाणी ही अर सगळी मान मरजाद नै लारो नगायनै चिरळाय पड़ी ही 'था माय अेक भी मिनख कोनी। सगळा जणा बगाई हो। थै मन्नै बळराय-बळराय मारलो चावो पन अबै म्है सूं थारा धमीड़ा कोनी सैइजै। मन्नै थारै बीच रैवणो ई कोनी। वीं रीस मे आपरी सासू नै डावण अर घरवाळा नै डाकी कैय दियो।

तद वीं रै धणी वीं नै कूट नाखी। बा फुराव दरी अेकान्त मे वैनगी।

सिभा ढळनै लागगी। रात जैड़ो धुपल्यो अधारो धीमै-धीमै नारर

जिस्यो हुयग्यो। गाव रै काचा-पाका घरां रै डागळै माथै चानणै रा आखरी टुकडा नटखट टाबरां री तरियां नाठण लाग्या।

वा उण सगळां नै जोवती रयी। कद अंधारो घणो गैरो हुयो अर कद दीया-चिमन्यां अर लालटेण रै चानणै री टीकियां चमकण लागी, बीनै मालम ही नी। वा तो ओळूं री खुभण सू बावली ही। उण मे डूबोडी ही।

वी नै याद आयो कै दसवीं रो इमतहान देवणै सू पैलाई वी नै आ टा लागगी ही के वी रो ब्याव तय हुयग्यो है। वा अचमें मे भरगी अर बी मांय रो माय वैगे ब्याव रो विरोध भी करियो के वा जदताई दसवीं पास नी करलै तद ताई ब्याव नईं करैली। इण बात सू घर मांय तूफाण मचग्यो अर वी रै मा-बाप सोचियो के आ भी आपरी वडी बैनज्यू किणी वेजातिये सू कचेडी मे जायनै ब्याव कर लेसी।

आ बात सौ टका साची ही के बी री वैन आपरै मायलै मारग नाठगी ही। इण रो कारण वी री वैन रो भावुक मनडो हो अर बी री वैन नै आ टा लागगी ही के उणरो ब्याव ठेठ गाव रै अेक छोरे सू हुय रयो है जिको अंगूठा छाप है। परचूण री दुकान मे पुडियां बाधै। ऐडी स्थिति मे वा आपरै सुपना नै किया रोग सकै? वा महानगर मे जनमी, बडी हुई अर भिणी।···

बी री वैन जद आपरै बाप नै आपरै मन री बात बताई तो बाप धरती आभै नै अेक करतो हुयो बोल्यो, 'थारो माथो खराब है। हूं बामण रो जायो म्हांरी बेटी नै अेक धोबीडै नै परणावूंला?

वी री वैन बतायो, 'मिनख स्याणो मिनख हुवै। बो न जाति-धरम सूं नईं, गुणां सूं पिछाणनो चाईजै। बो आखिर प्रोफेसर है। हूं बी रै सागै सोरी सुखी रैवूंली।

पण बाप नीं मानियो। तद वडी वैन अपणै आप ब्याव कर लियो।

अर वा?

इण मसाण सूं ई वा थिय सी गई कै वा आपरी वेन रै पगलिया माथै नी चाल सकै? पण उणरा माइत घणा सावचेत हुयग्या अर बी रो ब्याव जलदी सूं आपणै बीकानेर माय भटाभट कर काढियो।

वा सगळै ब्याव मे अेक मूरती री तरियां रयी। अेक निरजीव

कवस्या ही उपरी।

ब्याव रै पछै वा नागानर गाव आयगी । धोरा रै विचाळी वस्योड़ो बो गाव। वीं नै भाडायो ई घाघरो, ओढ़णो अर कांचळी, कुड़ती पैरणी पड़ती। ढांढ री रात ही वीं री भावुकता मरगी जद वीं रै धणी आवतै ई वीं रै डील री लूटखोट चालण लागग्यो।

वीं नै ठा लागगी के वा अेक जिन्स है जिकै नै वीं रो धणी भोगै। धणी ही क्यो, मैंग ना मैंग घरवाळा भोगै। सासू सुसरो, देवर, जेठ, जेठाणी · · · जद वीं नै लागतो के वीं री कोई आपरी कोनी। वा अेकली है'' वा आपरै लोगा मे अनपिछाणी है।

मावैली वा आपणा मे अजनबी हुयगी। कदेई-कदेई वीं नै लागतो के वा आपरी लास नै कांधा माथै खुद उठायनै ढोवै है। आ स्थिति वीं रै वास्तै बडी कोनी ही। अेक मिनख खुद आपरी लास नै उठाणै रै लखाव मे पचियै ज्यू हुळतो जावै। फेर अेक रै पछै अेक टाबरा रै जलम सू वीं रो तो मन ई निसरग्यो। जद कदेई वां रै मूडै सू हीरा जेडा वळवळता बोल निसर जावता तो नगळै घर मे रोळारप्पो मच जावतो अर उण री वैंत री लरिया वीं मा रै भी घर सू नाठ जावण रो मूडो आरोप लगा दियो जावतो। वीं रै पीरैवाळा नै कोजी कोजी अर अणूती बात्या कैयी जावती। वा आपरै काळजै नै आपरो मायली दामती सू बाळती रैवती। अगीठी ज्यू धुखती रैवती। पण वा न तो नाटती अर न वीं रो धणी वीं री भावनावा नै सैंभायतो। गायत वा अर्थ मा बणगी ही अर वीं रो आपरै नाना-नाना चार टीगरा सू जुड़ाव हुयग्यो हो। वा सोचती—''मायड थारी किती मजबूरया हुवै ?''

घणो गैरो अधारो पसरग्यो हो। तारा दूखणिया ज्यू लाग रया हा। विचारा मे डूब्योड़ी नै वखत री सुध भी नईं रयी।

जिणी टीगर रो कूकणो सुणायी पड़ियो। बा हड़बड़ाय'र उठी। सोचण लागी—''म्हारो छोटोडो लाडकवर कूक रयो है। वा निरवल होवण लागी। माय सू गळन लागी। जुड़ाव री पाख्या पसरण लागी।···वा जावती-जावती थमगी अर खुद नै फिटकारो देवती बोली, ''जद परणीज्योड़ो सुख देवै कोनी तद जायोड़ा के सुख देसी ?''

तद वीं रै धणी हेलो पाड़ियो, ''सुणै है, छोटोडो मुन्नो कूकै। अबै

रीम नै थूक'र घरै चालपरी ।"

वी रै धणी रै अेक हाथ माय लालटैण ही अर दूजै हाथ में छोटोड़ो मुन्नो । वो वाड़ै रै मांय खिडियोडी घास माथै पग राखतो बी रै कनै आयो । वी रै दारू पियोडी ही । बी री आख्यां माय लील जावण री वासती ही । वो कित्ती देर ताई वी सू हाथाजोडी करतो रयो फेर धिगाणै वी नै अपडनै घरलै आयो । धणी वी री गोदी मे छोटेड़ै मुन्नै नै दे दियो ···टावर रोवतो रोवतो चुप हुयग्यो ।

वी नै आपरी स्थिति अर अेक लुगाई री नियती माथै रोवणो आयग्यो । वा वसर-वसर रोवती जावती अर सोचती जावती कै लुगाई रो जमारो विरथा है ! खाली गोन्नी पै रै वास्ते है !

बी रा सगळा टाबर आयनै वी रो घेराव कर लियो ।

□

मिनखखोरी

'हुत्री।'

'बोल।'

अेक बात पूछणी चावूं ?'

'पूछ।'

'तू म्हारी पक्की भायली है नी।'

जे नीं होवती तो थारै सागै नाठ क्यूं आवती ?'

'पण तू घड़ी-घड़ी ऐड़ो क्यूं करै ?'

'कांई करूं ? मनमाफिक मोट्यार नै जोवती ही। सुण बिटला, म्हैं बेमी भिणियोड़ी कोनी, पोथ्यां री बातां भी नीं जाणूं ? पण इत्तो पकायत जाणूं के जको काम चोखो लागै, मिनख उण नै ई घणो करै।'

'पण सयाणा लोग कैवै के लुगाई जात जीवण मे अेक दफै ई पेम करै।'

'जका कैवै, उणा नै ठा कोनी। वै तो सुणी सुणाई बघारै। अरे बिटला! आपणै गांव री गिरजड़ी है नी, बा मालजादी राड़, मन्नै समझाण लागी के अेक मिनख रै कीचड़ ज्यूं क्यूं नी चिपजावै, जद के तू जाणै के बा सूवो बात करै ही कोनी।...म्हैं उणा नै झिड़की देवतै कैयो—अरी अे छिनाळ; अेक थाळी मे कोनी खावूं तो कोनी खावूं—जकी करूं चौड़ै-चौगान करूं, छानै ओलै कोनी करूं!'

'पण ओ तो लुगाई जात माथै कलंक हुवै।'

'जको मिनख म्हारै जेड़ी लुगाई रै सागै नाठै उण रै माथै कलंक क्यूं नीं लागै। काम तो अेक जिसो ई है...बिटला! म्हैं थारै सागै कच्चर-

कच्चर करणी नी आई। म्है थारै सागै गुड़ सो मीठो जीवण जीणै आई हू। रामसा पीर री सौगन'''तू म्हारै मनचायो मोटचार है।'''म्हारी सेज रै सिणगार-लारै मती देख, अबार नै चोखो वणाव !

'पण तू नी जाणै'''।'

'के जाणू कोनी ? सहमैं क्यू ? बोल'''।'

'के माणस मे घडी-घडी लारै देखण री चाय हुवै ?'

'तो तू घडी-घडी लारै जोवैलो।'''विठला जे तू इंया करैला तो दु:ख पावैला। तन्नै आज जित्तो लारै देखणो है, देखलै ! फेरू म्है तन्नै लारै नी देखण दूली। मुडदा उठावणिया जीवता नै राजी नी राख सकै ! मुड़-मुड़ जोवणिया अगाडी वध सकै कोनी'''तन्नै म्हारै सागै अगाडी बधणो है, के नी ?'

'वधणो है पण'''।'

'विठला ! के तू मन्नै खाली परधनी वणाणै ताई लायो हो ! लाय बुझगी जणै अवसोया करै ! मनडै मे खोट लावै।'

'नी।'

'तू कूड बोलै ! जे थै म्हारै सागै हुशियारी करी तो तन्नै फोडा पड़ैला। म्हैं थारै सागै गाव री काकड सू बारणै पग राख्यो, घरवाळा नै पारखा ज्यू वैर घाल्यो। तन्नै बताद्ू—लारै जोवण री म्हारी आदत कोनी ! बीतग्या सो विसरग्या।'

'म्है अबै पछताव्ू।'

'मन्नै भी पछतावो लागै के म्है ऐडै कायर रै लारै क्यू नाठनै आई, जकै रो काळजो सऊ-भऊ करै।'

'नी हुको !'' साची वात तो आ है के तू मिनखखोरी टैरी। थारै माथै किया भरोसो करू ?'

'अरे ओ गंडक ! जद म्हैं मिनखखोरी हू तो तू लुगाईखोरी कोनी के ? सूघी, चाटी, नोची अर' '।'

'इण गोखै नै उढकाय दै।'

'क्यू ?'

'डाफर बाजै ! हं-रू लड़ो हुय रैयो है। ठंड आज तो काळजै मैं बींध

देवैंमी।'

'धूजै मत रे—म्हारै पगथाई आवजा···आ असमानी सोई म्हारी पैमरी मामू री बणायोड़ी है—धणी निवाई है।'

'नीं ··थारै मार्ग भेक सोई मे आवन री भी करै कोनी! तू रीस नी करै तो भेक बात कंवू।'

'कंव···कोनी रीस करू।'

'थारै कन्नै थाबू तो कोनी?'

'कोनी।'

'अर थीं···।'

'ओ थोथी भरणिया! थारै जैड़ा मिनखां नै ठिकाणै लगावण सारू म्हनै चाकू-छुरी री दरकार कोनी पड़ै।'

'फेर!'

'अबा मुदो म लुद मर जावै, उणा नै म्हैं क्यू मारू?'

'तो थैं थारै धणी सावळै नै बिना चाकू मारियौ।'

'नईं···म्हैं उणां न मारयो कोनी। म्हारै माथै कूडो दोस मढ़यो हो, जणै ई तो मन्नै कोरट-कचैड़ी मे सजा कोनी हुई। इज्जत रै साथै बरी हुई। सावळो गुण्डो, लफंगो, बेईमान हो! दूजा नै बणाय'र रिपिया ऐंटतो।'

'लोग कंवै उण री हत्या मे थारो हाथ हो?'

'लोग अधारै मे लठ चलावै।···'

'फेर तू उणां सू रिसांणी क्यू ही!'

'वो मिनख कोनी हो?'

'मिनख कोनी हो? फेर वो के हो?'

'कुत्तो।'

'कुत्तो।'

'नी···गेंडो।'

'गेंडो।'

'नी अजगर···!'

'अजगर।'

'नीं···धो रींछ हो···भालू···अेक धासणियो भालू···म्हांरी जाण में उण में कोई ढोर-डांगरां रो मिल्योड़ो सुरूप हो।'

'थें उण री हत्या कोनी की ? सांच कैवें ?'

'म्हैं नीं तो कूड़ बोलूं अर नीं म्हैं मतियां आळा स्वांग रचूं। म्हैं चारित्री-मिनखखोरी हूं। मिनखखोरी पक्कायत हूं पण था लोगां रै बिचाळै।···पण म्हैं म्हांरै हियै रै बिचाळै अेक सनो हूं। वोईज करूं जको मन्नैं चोखो लागै ! बिठला ! तू संपेरो हो नीं···सांप-सांपण अपड़तो हो नीं ?'

'हां।'

'थें इण जोखम रो काम क्यूं छोडियो ?'

'जान नैं खतरो रैवतो अर म्हैं बेगो मरणो नीं चावूं। हुको ! मन्नैं मरणे सूं घणो डर लागै।'

'जको डरे वो मरै···थारो फन्नो वेगोईज कटसी।···सुण ! दारू पीवैंला।'

'नईं !'

'क्यूं ?'

'कम सूं कम थारै सागै कोनी पीवूं।'

'···।'

'तू दारू पियै पछै हाथै-बाथै कोनी रैवै ! थारै मूंडै सूं फीटा बोल निसरै ! फेर तूं मन्नैं हित्यारी लागै !'

'हित्यारी !'

'हां, काल थारै सागै पियै पछै म्हारो काळजो डरू-फरू करतो रयो ! वजै, थारै हाथ में अेक जेवड़ी ही। मन्नैं पल-छिन्न लागतो कै तू म्हारो गळो मसोस काढैलो।'

'नईं रै बिठला···' म्हैं किण रै सागै अे खूनी खेल कोनी खेलूं ! म्हारां मोवणा सूवा, तू मन्नैं घणो ई चोखो लागै···म्हैं थां सूं परेम करूं···इणी खातर म्हैं थां सूं ब्याव कोनी करूं ! म्है थारी खाली भायली रैवणी चावूं···भायली···लुगाई कदेई नी बणनी चावूं···लुगाई बण्यां पछै धणी मारै-कूटै, गाळ्यां बकै···जबर जन्ना करै···सुण···तन्नैं म्हैं अेक

मैद री बात बतावूं···पणखरा मरद पणी बणतंपाण जिनावर हुय जावै। म्हैं तो छाती ठोक नै कंवू—लुगाई नै घरआळी बणनो ई नी चाईजै! घरआळी बणतंपाण वा लुगाई सू पगरखी हुय जावै।'

'अरे···अरे···ऽऽ···'

'तू इत्तो डरू-फरू कियां हुयग्यो।'

'जोव···उण खूंणै मे अेक गिलारी अेक बिच्छू नै गिटै···।'

'गिलारी मे मोकळो जैर हुवै।'

'बिच्छू उण नै डसै क्यू नी ?'

'डमतो तो पककायत हुवैला 'पण असर कोनी होवतो हुवैला।'

घिराण आवै मन्नै तो···किण सूगली तरियां गिट्टे है।'···कित्ती कोजी मौत पावै है ओ बिच्छूडो। तू वी नै छोडाय दै···म्हारो जी आकळ-बाकळ हुवै।'

'म्हैं क्यू छोडाय दू···तन्नै दया आवै तो तू ई ओ पुन कमानै।···बिटला···मन्नै तिलचट्टो सू वडी घिराण आवै।'

कठैई तू मन्नै तिलचट्टो तो नी जाणै।'

'नईं रे···तू मन्नै लागै।'

''·······?''

'इयां आंख्यां फाड-फाड पे देखे रे···मायी-बनावू···
लागै ?'

काढ देसी ! ···म्हैं उण नैं रिपिया दिया कोनी। फेर वै मन्नैं मजूरी करणै भेजणी चायो। बोल्यो—कमाव'र लाव···घर री गाडी चालै कोनी ! म्हैं उण नैं अंगूठो बतायो, म्हां सू मजूरी हुवै कोनी ! म्है तो घरां मे पग पसारनैं सोवूंली···म्है सू घर-रा खोसणां अर बारला छातो कूटा कोनी हुवै ! ···विठला ! आ मरद-री जात वापडी लुगाया नैं नफै री जिन्स जाणै। घणी नाजोगी है आ मरद जाति ! लुगाई नैं बुआरी सू लेयनै परयनो तो वणाय सकै पण वींनै पून अर तावड़ो नी वणनै दै ! म्हैं पून अर तावड़ो वण'र जीवूली···सुण···म्हैं तन्नैं कदैई नी छोडूली···म्हैं चीचड वण'र थारै चिपक्योड़ी रैवूली।'

'हुकी।'

'हुं ऽऽ।'

'तू दारू पीवै कीनी ! कित्ती ठंड लागै।'

'पीवूली तो थारै सागै पीवूली···जे म्हैं पीवण पछै हित्यारी भी लागू तो भी म्हैं थारी हत्या तो सपनै में भी नी करूंली···म्हारी सौगन ! सू मन्नैं घणोई चोखो लागै ! हाय ! ···तू तो सिंघ री जगा गादड़ो निकल्यो ! लै दारू पीव···खाटी केसर-कस्तूरी है।'

'तू लाई कठै सू ?'

'आख मार'र।'

'के ?'

'कुड़ कोनी बोलू ? ···कालै रात पीणै री जद ज्यास्ती मन में आई तद म्हैं ठेके माथै गई।···ठेकदार म्हारै डील नै घूरण लाग्यो···म्है भी उणा नै इंयां ई आंखडी मार काढी। ठेकदार चित्त···मांयनै आवण खातर कैयो—म्है उठाय बोतलड़ी टुर वहीर हुई···'फेर आवूली मदछकिया···' गोधै ज्यू पोलो मूडो कर'र वो जोवतो रैग्यो ! लुगाई रो डील तो चमत्कारी हुवै ई है।···विठला।'

'······'

'नेहचो कर'र दारू गिटका लै।'

'नई···मन्नै गांव जावण द।'

'गाव···बयू रे गिरज···।'

'थारै होठां माथै खून लाग्योड़ो हांसी दीसै।'

'खरी-खरी सुणीस···अबै ताव थारा अस्त ई जासी···सुण ··· बिठला···तूं पक्को मरद है।···म्हैं थारै मारै नाठ'र आई हूं···क्यूं··· म्हनै थै सू मच्ची लाग है।···परेम है···म्हैं म्हनै कदेई नीं छोडूं···तन्नै तो सगळी उमर म्हारै सागै रैवणो पड़ैला।'

'आ तो जोर-जबरदस्ती है।'

'म्है घणी जबरी हूं···परेम करू तो परेम कम्म करना ··आ जेवड़ी दीसै···इण सूं म्हैं निरा काम लेय सकूं।'

'थै तू म्हनै जान सूं मारैली।' 'तू जेवड़ी नै अगूंठी माथै क्यूं लपेटै ? इण जेवड़ी में फेर काड ··म्हनै लागै थे तू म्हारै गळै रै घाल मेर जेवड़ी लपेटै है ··मालजादी दांव क्यूं काढ़ै ?'

'नकमीडा···म्हनै लागै थारो जो म्है सू भरग्यो दीसै। थारै परेम रो नशो उतरग्यो दीसै। पण थै म्हारो नशो बधाण नाखियो। ··देव कोडिया,···बिना घणदां माड काढिया म्हारै डील माथै। गिरज कठैई रा···गिण ?···गिण···गिण सकै कोनी ?···कठै-कठै गिणीस। साच कैवूं ···म्हनै गिरज चोंचा लागै। तूं तो घणोई सुवावै। जे थै म्हारै सागै की कूड-कपट करी तो म्हैं थारो खून पीव जावूंली। ··तू जावण रो नाव मती लीजै। थारी हुक्को-पाणी म्है चलावूंगी·· सगळी उमर नाई थारो पेट भरू ली·· तू जाणै कोनी···म्है पूठी मुडनै जोवू कोनी·· म्हैं लारै जोवू कोनी।'

'म्हनै थै सू डर लागतो रैवै।'

'कूडै-कपटी रो हिवड़ो निरबल हुवै।'

'म्हैं थारै सागै अेक होड माथै रैवूंला।'

'बोल।'

'तू जेवड़ी अर चक्कू नैं कदेई नीं छूवैली।'

'फेर साग नैं कुण बधारसी।'

'म्है।'

'थारी होड मानी। आ···अबै तो दारु पीव···म्है मूं भी वादो कर'र कै तू लारै कोनी जोवै ! बिठला···चोखी लुगाई जणैई चोखी रैय सकै

जद बीनैं भी सांतरो अर लूंठो मोटयार मिलै ! मन्नैं दो मरदां ठगी··· सताई···कदताईं सैंवती रैंवती···म्हैं अहिल्या तो कोनी···पण थारै सागो मसाणा ताईं निभावूंली···

'सुण···इंयां रैंवणैं में के भदरक···मन्नैं तो चौसठ घड़ी-आठा पौर लागै के मौत म्हारै माथैं मंडरावै।···सच्ची, पाछलै कित्ताई दिनां सू म्हैं मन्नैं मुड़दो जाणू।'

'की भी जाण···म्हैंतन्नैं नी जाणं दूलो। जा···बजार सू भुजिया अर खाणो ले आव···पारघट्टो होवण री चेष्टा करीजैं मती···जा···जा रै··· गयो परो···गादड़ै आवण में घणो मोड़ो कर दियो ! फफलो कठैई रो··· सांचली लारलै दिनां सू मुड़दो मुड़दैं ज्यूं जीवै···फेर म्हारै सागैं आयो ई क्यू ? सागैं जीणैं मरणैं री वाता क्यू करी···जाणगी···म्हारै रूपं जेड़ै डील नैं पावण सारूं ओ बांदरै ज्यू नाचतो हो···म्हारो ओ फूटरोफरो अर गादळो डील···पधारग्या म्हारी सेज रा सिणगार···बैंस···दारू पी··· अरे ! के लुकावै है ? सच बोल···के है।···मैं ऽऽ···मैंऽऽ के करूं ? तन्नैं म्हारी सौगन···अे गोळ्या किण री है।'

'नशै री···म्हैं लारलै कित्ताई दिना सू थाकग्यौ···अमूजग्यो··· डरग्यो···सोचं के मर जावू···तू परेम करै कोनी···जबरदस्ती करै··· जे म्हैं गिरज हू तो तू अजगरिणी लागै।

'समझगी···तू धापग्यो।···मरैला···ओ म्हारा भायला तू मरैला··· आतम-हत्या करसी···ओ···जा गडकड़ा···जा···म्हैं तन्नैं छोडियो··· मुक्त करियो···म्हैं जरख कोनी···हुकी हूं···हुकी···अेक लुगाई···थारी भायली···परेम री भूखी-तिसी···म्हैं थैं सू सांचो परेम करियो···कदास आगैं नी कर सकूला···कदास मन्नैं फेरू ओ हीज जीवण मिले जको म्है भोग्यो हुवै···लुगाई बापड़ी चिड़ी ज्यू भी कोनी उड सकै···जा···नाठ-जा···अवार···ईं वेला ई···आज म्हैं दारू अेकली पीवूंली···ऊभो क्यू है ? ···जा गादड जा···जावे के धक्को देयनैं काढू ? तन्नैं अबै डरनै री दरकार कोनी···हुकी—पूठी गाव री काकड़ मे पग राखै कोनी···बा थारै देखैं कोनी···जा···जावैं···ले सौ रिपिया ले जाव···रस्तैं में खावेला के ! अबै मुड़दो रोवै···कूड़ो—कपटी···नेड़ो···मती आव···छूयैं ना···थैं सूं

नाता-रिश्ता सैंप···म्हैं तन्नैं कदैई छिमा नी करूंली···तू हरामजादो लागै···सपेरै रो जायोड़ो कोनी···जे होवतो तो अेक नागण नै पक्कायत बस मे कर लेवतो···गयो परो···सरनाटो···अेक कूडो कपटी···मुड़दार गयो परो···ओह् हुकी···तू लुगाई बणी ई क्यू···क्यू बणी···जे मन्नै कदैई ईश्वर मिल्यो तो उण रा कठ झालर पूछूली के थै मन्नै लुगाई क्यू बणाई। क्यू बणाई···अरे हुकी··थारी आंख्यां मे आंसूडा···हुकी थै सूंटी सू लूंठी लडाई 'हस'र लडी। फेर आज रोवै किण खातर !··· लड-हुकी···भिड़जा···बिठना ! म्हैं मिनखखोरी कोनी। चोखे मिनख रै मिलतै पाण म्हे भी चोखी लुगाई हुय जावूली···आह् ! ओ दारू कित्तो चोखो हुवै—सैंग दुखडा विसरा देवै—विसरा देवै ··उक्··· उक्···उक् !